Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَكُمْ هُزُوًا وَّلَعِبًا مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَالْكُفَّارَ اَوْلِيَآءَ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ

(सूरत अन्निसा आयत : 174)

अनुवाद :हे वे लोगो जो ईमान लाए हो। उन लोगों में से जिन्हें तुम से पहले किताब दी गई उनको जिन्होंने तुम्हारे दीन को हंसी ठट्ठा और खेल तमाशा बना रखा है और कुफ़्फ़ार को अपना दोस्त न बनाओ और अल्लाह से डरो यदि तुम मोमिन हो।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

साप्ताहिक बदर क़ादियान

Weekly BADAR Qadian HINDI

वर्ष- 6
अंक- 50

मूल्य 575 रुपए वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

11 जमादियुल अव्वल 1442 हिज्री कमरी 16 फत्ह 1400 हिज्री शम्सी 16 नवम्बर 2021 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नसीहतें

हजर-ए-असवद को छड़ी से छूना

(1607) हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज्जतुल विदा में (अपने) ऊंट पर सवार हो कर तवाफ़ किया। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हजर-ए-असवद को एक छड़ी के माध्यम से छूते।

हजर-ए-असवद की तरफ़ इशारा करना

(1632) हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बैतुल्लाह का तवाफ़ किया और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम एक ऊंट पर सवार थे। जब आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हजर-ए-असवद के सामने आते तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उस की तरफ़ एक चीज़ से जो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के हाथ में थी इशारा करते और अल्लाहु-अकबर कहते।

(सही बुख़ारी, भाग 3 किताबुल हज्ज, प्रकाशन 2008 क़ादियान)

मैं सच कहता हूं कि हज़रत अबू बकर रज़ि अल्लाह इस्लाम के लिए दूसरे आदम थे आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आचरण का प्रभाव उन के ऊपर पड़ा हुआ था और दिल विश्वास के नूर से भरा हुआ था।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

हिज्रत में अपने साथ सफर में ले जाने के लिए हज़रत अबू बकर रज़ि के चुनाव में भेद

इसी तरह पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का चुनाव था। उस समय आपके पास 70 ,80 सहाबी मौजूद थे, हज़रत अली रज़ी अल्लाह अन्हो भी आपके पास ही थे,परन्तु आप ने इन सब में से हज़रत अबू बकर रज़ि ही को चुना। इस में भेद क्या है? बात यह है कि नबी ख़ुदा तआला की आँख से देखता है उस का फ़हम ख़ुदा तआला की तरफ़ से आता है,इस लिए अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अपने कश्फ़ और इलहाम से बता दिया था कि इस काम के लिए सबसे बेहतर और उचित हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ ही हैं।

हज़रत अबू बक्र रज़ी अल्लाह अन्हो इस तंगी के ज़माना में आपके साथ हुए। यह समय ख़तरनाक परीक्षा थी। हज़रत मसीह पर जब इस प्रकार का वक़्त आया,तो उनके शागिर्द उनको छोड़कर भाग गए और एक ने सामने ही लानत भी की परन्तु सहाबा करीम रज़ि में से हर एक ने पूरी वफ़ादारी का नमूना दिखाया। अत: हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ ने आपका पूरा साथ दिया और एक ग़ार में जिस को ग़ारे सौर कहते हैं। आप जा छुपे। शरारत करने वाले कुफ़्फ़ार जो आपको कष्ट पहुंचाने के लिए षडयन्त्र कर चुके थे,तलाश करते हुए इस ग़ार तक पहुंच गए। हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ ने निवेदन किया की कि अब तो यह बिलकुल सिर पर ही आ पहुंचे हैं और यदि किसी ने थोड़ा भी नीचे निगाह की तो वह देख लेगा और हम पकड़े जाएंगे। इस वक़्त आपने फ़रमाया। لَا تَحۡزَنۡ اِنَّ اللّٰہَ مَعَنَا(अत्तौब:40) कुछ ग़म न करो। अल्लाह तआला हमारे साथ है। इस

शेष पृष्ठ 11 पर

इन्सानी क़ानूनों में हमेशा यह दोष होता है कि कुछ के अधिकार छीन लिए जाते हैं और कुछ को अधिक दिया जाता है
वे क़ानून जिसमें सब के अधिकारों का ध्यान रखा जाए
न किसी के हक़ में कमी की जाए न किसी का हक़ लेकर दूसरे को दिया जाए केवल अल्लाह तआला बना सकता है।

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो आयत 10 وَعَلَى اللّٰهِ قَصْدُ السَّبِيْلِ وَمِنْهَا جَآئِرٌ ۚ وَلَوْ شَآءَ لَهَدٰىكُمْ اَجْمَعِيْنَ की तफ़सीर में फ़रमाते हैं :

وَعَلَى اللّٰهِ قَصْدُ السَّبِيْلِ के अर्थ हैं ख़ुदा तआला पर सीधे रास्ते का बताना वाजिब है अर्थात عَلَى اللّٰهِ بَيَانُ قَصْدِ السَّبِيْلِ यही मज़मून दूसरी जगह इन शब्दों में वर्णन हुआ है اِنَّ عَلَيْنَا لَلْهُدٰى अर्थात हिदायत का वर्णन करना हमारा ही काम है और हम ही पर वाजिब है। قَصْدُ السَّبِيْلِ से बताया कि सीधा रास्ता या इफ़रात व तफ़रीत से महफ़ूज़ रास्ता अल्लाह तआला ही बता सकता है अन्यथा इन्सान जब भी दुनिया के लिए कोई रास्ता तजवीज़ करता है उस में इफ़रात व तफ़रीत से काम लेता है।

इस में यह भी बताया है कि कोई इन्सान भी ऐसा नहीं (सिवाए उस के जो ख़ुदा तआला की निगरानी में हो) जो पक्षपात न हो। किसी से उसे दुश्मनी होती है किसी से मुहब्बत, किसी को अपना समझता है और किसी को ग़ैर। इस लिए इन्सानी क़वानीन में हमेशा यह कमी होता है कि कुछ के अधिकारों का हनन किया जाता हैं और कुछ को ज़्यादा दिया जाता है। अत: वे क़ानून जिसमें सब के हुक़ूक़ का ख़्याल रखा जाए न किसी के हक़ में कमी की जाए न किसी का हक़ को

शेष पृष्ठ 11 पर

126वां जलसा सालाना कादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमनीन ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने 126 वें जलसा सालाना कादियान के लिए 24-25-26 दिसम्बर 2021 ई(दिनांक जुम्अ , हफ़्ता और इतवार)की तारीख़ों की मंज़ूरी प्रदान फ़रमाई है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की मन्ज़ूरी के अनुसार मौजूदा कोविड 19 के हालात के प्रोटोकॉलज़ को समक्ष रखते हुए इस साल वही लोग जलसा में शामिल होंगे जिनको बाक़ायदा जमअत से शामिल होने के लिए टिकट और दावतनामा जारी किया जाएगा बाक़ी जमाअत के लोग अपनी जमातों में ऑनलाइन एस्ट्रियमिंग के द्वारा जलसा सालाना के रुहानी प्रोग्रामों से लाभ उठा सकेंगे। इस बारे में पहले से नज़ारत उलिया की तरफ़ से जमाअतों में सर्कुलर कर दिया गया है। जमाअत के लोग इस मुबारक जलसा के सफल आयोजन के लिए दुआएं जारी रखें। अल्लाह तआला हम सबको इस जलसा से लाभान्वित होने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए और नेक रूहों के लिए हिदायत का कारण बनाए। आमीन

(नाज़िर इस्लाह व अरशाद कादियान)

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

प्रश्न उत्तर

सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमिनीनन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह अय्यदहुल्लाहु तआला

बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ से पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर (प्रथम 13)

शादी के समय हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हो की आयु के बारे में तारीख़ और जीवनी और तफ़सीर और हदीस की पुस्तकों में बहुत मतभेद पाया जाता है

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की आयु विदाई के समय 9 वर्ष से19 वर्ष तक लिखी गई है

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने शादी के वक़्त आप की नौ वर्ष के सम्बन्ध में रिवायत का पूर्णता खंडन फ़रमाया है

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने शादी के वक़्त हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की उम्र तेराह चौदह वर्ष क़रार दी है और यही सही है

प्रश्न : हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की आयु शादी के वक़्त क्या थी? इस प्रश्न के उत्तर में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल ने फ़रमाया :

उत्तर : आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की शादी समय हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की आयु के बारे में इतिहास की पुस्तकों और जीवनियों और तफ़सीर और हदीस की पुस्तकों में बहुत मतभेद पाया जाता है। इसलिए हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ निकाह के वक़्त हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की आयु 6 वर्ष से लेकर 16 वर्ष और विदाई के वक़्त 9 वर्ष से 19 वर्ष तक लिखी गई है।

जबकि सहाह सित्ता की रिवायत जिन में सही बुख़ारी की रिवायत भी शामिल हैं, में हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की आयु निकाह के वक़्त छ: वर्ष और शादी के वक़्त नौ वर्ष वर्णन हुई है। लेकिन यदि इन रिवायत को दिरायत और रिवायत के उसूलों पर परखा जाए तो हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की आयु के बारह में मर्वी यह रिवायत सकाहत के मयार से नीचे ठहरती हैं।

इस प्रकार से सहा सित्ता में वर्णन 21 रिवायत में से 14 रिवायत हिशाम बिन उर्वा से मर्वी हैं और बाक़ी रिवायत अबू उबैदा, अबू सलमा और अस्वद से मर्वी हैं। ताज्जुब की बात है कि इतिहास की पुस्तकों और जीवनियों के इस निहायत प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण वाक़िया को किसी जलील-उल-क़दर सहाबी ने वर्णन नहीं किया।

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की कम आयु में शादी के सम्बन्ध में रिवायत पहली बार 185 हिज्री में लोगों के सामने आईं जबकि इस मज़मून की अक्सर रिवायत के रावी हिशाम और उर्वा को वफ़ात पाए एक समय गुज़र चुका था। मज़ीद यह कि हिशाम बिन उर्वा जिनकी ज़िंदगी का ज़्यादा समय मदीना में गुज़रा, और मदीना के प्रसिद्ध मुहद्दिस, इमाम मालिक रहमहुल्लाह (हिशाम बिन उर्वा) के एक माया नाज़ शागिर्द थे, इसके अतिरिक्त आपकी लिखित किताब मौअता ईमाम मालिक में इस रिवायत का कोई वर्णन नहीं। अपनी आयु के आख़िरी हिस्सा में हिशाम बिन उर्वा जबकि अंधे हो चुके थे, हाफ़िज़ा कमज़ोर हो गया था, (जरह और तादील के कुशल लोगों के अनुसार) उन्हें वहम और भूलने का रोग हो चुका था उस वक़्त जब वह कूफ़ा चले गए तो वहां उन्होंने पहले स्थान पर यह रिवायत वर्णन की और जिस व्यक्ति से रिवायत वर्णन की उसने भी उनकी वफ़ात के बाद क़रीबन चालीस वर्ष की मज़ीद प्रतीक्षा की और फिर उस रिवायत को वर्णन किया ताकि किसी किस्म की समर्थन और खंडन का प्रश्न ही न उठ सके।

अत: मदीना में रहते हुए हिशाम की यह रिवायत वर्णन नहीं करना और उनकी वफ़ात के कई वर्ष बाद तालीफ़ होने वाली किताब में इस का वर्णन उस रिवायत के बारे में संदेह पैदा करता है। यह सम्भावना है कि बैत वालों और विशेषता हज़रत आईशा सदीका रज़ियल्लाहु अन्हा के किरदार को निशाना बनाने की ख़ातिर यह रिवायत घड़ी गई हो। ताकि साबित किया जा सके कि वह पवित्र पत्नी जिसके बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का फ़रमान था कि इस से दीन सीखो, उस की हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से कम उमरी में शादी जबकि वह अभी सहेलियों और गड़ियों से खेलती थीं तथा अभी वह अपने बचपन में ही थीं कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वफ़ात हो गई, इस से क्या दीन सीखा जा सकता है?

फिर सही बुख़ारी जिस में यह रिवायत वर्णन हुई हैं, ख़ुद उसके अंदर हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के निकाह के बारे में रिवायत में मतभेद पाया जाता है। इसलिए एक रिवायत में हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा का वर्णन है कि हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा की वफ़ात के तीन साल बाद हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मुझ से शादी की। जबकि दूसरी रिवायत में है कि हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मदीना जाने से तीन वर्ष पहले फ़ौत हुईं। फिर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम दो वर्ष या उस के क़रीब क़रीब ठहरे और फिर हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से निकाह किया।

अत: अतिरिक्त इस के कि हदीसे जमा करने वालों ने निहायत सावधानी के साथ इस काम को सरअंजाम दिया है लेकिन फिर भी इस में ग़लती और कल्पना का पहलू बहरहाल मौजूद है क्योंकि यह काम हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वफ़ात के क़रीबन डेढ़ दो सौ साल बाद शुरू हुआ जबकि मुस्लमानों के कई फ़िरक़े बन चुके थे और कई किस्म के मतभेदों उनमें पैदा हो चुके थे। इसलिए इस ज़माना के हकम और इन्साफ करने वाले हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अन्य मुआमलात की इस्लाह की तरह इस मसला का भी निहायत अहसन ढंग में हल फ़रमाया। हज़ूर फ़रमाते हैं "जबकि हम सम्मान की दृष्टी से हदीसों को देखते हैं लेकिन जो हदीस क़ुरआन-ए-करीम के विपरीत, आँहज़रतआँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सम्मान के विपरीत हो उस को हम कब मान सकते हैं। उस वक़्त हदीसों जमा करने का वक़्त था। जबकि उन्होंने सोच समझ कर हदीसों को दर्ज किया था परन्तु पूरी एहतियात से काम नहीं ले सके। वह जमा करने का वक़्त था लेकिन अब नज़र और ग़ौर करने का वक़्त है।"

(मलफ़ूज़ात भाग 9 पृष्ठ 472,471 ऐडीशन 1984 ई.)

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की आयु के मसले का जब हम एक दूसरी दृष्टी से जायज़ा लेते हैं तो इतिहास की पुस्तकों और जीवनियों की पुस्तकों में हमें यह बात भी पता चलती है कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो की चारों औलाद (हज़रत अब्दुल्लाह, हज़रत अस्मा, हज़रत अब्दुर्रहमान और हज़रत आईशा) हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की बेसत से क़बल पैदा हो चुके थे और जीवनी की मुरत्तिब करदा आरंभिक मुस्लमानों की फ़हरिस्त में हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा का नाम भी शामिल है, यदि हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की पैदाइश नबुव्वत के पांचवें वर्ष में हुई थी तो आपका नाम आरंभिक मुस्लमानों की फ़लिस्ट में कैसे शामिल हो गया?

इतिहासकारों ने लिखा है कि हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हो हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से दस वर्ष बड़ी थीं और हिज्रत के वक़्त हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हो की आयु 27 वर्ष थी। इस हिसाब से भी हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा का जन्म का सन् 4 नबुव्वत से पूर्व बनता है। और यदि आपका निकाह हिज्रत से तीन वर्ष पूर्व हुआ था तो उस वक़्त आपकी आयु 14 वर्ष बनती है।

ग़ज़वा-ए-अहद जो कि 2 हिज्री में हुआ इसके बारे में सही बुख़ारी में रिवायत है कि हज़रत आईशा पुत्री अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हा और हज़रत उम्मे सलीम रज़ियल्लाहु अन्हा से पानी की मशकें अपनी पीठों पर लाद कर लातें और लोगों को पानी पिलाती थीं। यदि हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की आयु उतनी ही छोटी थी कि वह एक कमसिन बची थीं तो वह अपनी पीठ पर पानी से भरी मशकें लाद कर किस तरह दौड़ दौड़ कर मैदान-ए-जंग में ज़ख़मियों को पानी पिलाने की डयूटी सरअंजाम दे सकती हैं। अत: इस से भी साबित होता है कि 2 हिज्री में आपकी आयु इतनी बहरहाल थी कि आप मैदान-ए-जंग में इस किस्म का भारी काम कर सकती थीं।

तारीख़ की पुस्तकों में यह हक़ीक़त भी मौजूद है कि हज़रत की आंहज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से शादी से पहले जुबैर बिन मुतअम से मंगनी हुई थी। उस समय में आपकी मंगनी का होना बताता है कि आपकी उम्र छ: साल नहीं थी, विशेषता इसलिए भी जब हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तरफ़ से हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो को हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के लिए रिश्ता का पैग़ाम मिला तो हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने

शेष पृष्ठ 12 पर

ख़ुत्बः जुमअः

अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु और उमर रज़ियल्लाहु अन्हु जन्नत के प्राथमिक और अंतिम के, समस्त बड़ी आयु के लोगों के सरदार हैं अम्बिया और मुर्सलीन के अतिरिक्तरसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो जन्नत वालों के चिराग़ हैं

निसंदेह पहली उम्मतों में मुहद्दिसीन होते थे और यदि मेरी उम्मत में कोई है तो वह उमर बिन ख़त्ताब हैं

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का स्थान जानते हो कि सहाबा मैं किस क़दर बड़ा है यहां तक कि कभी कभार

उनकी राय के अनुसार क़ुरआन शरीफ़ नाज़िल हो जाया करता था और उनके हक़ में यह हदीस है कि शैतान उमर के साया से भागता

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मेरी उम्मत में से अल्लाह के दीन में सबसे ज़्यादा मज़बूत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु हैं

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान ख़लीफ़ा राशिद फ़ारुके आज़म हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो की विशेषताओं और गुणों का वर्णन

फ़िरिश्ता सिफ़त, सादा तबीयत, कम बोलने वाले, गरीबों का ख्याल रखने वाले, सादगी और विनम्रता के उदाहरण और निहायत मेहमान नवाज़ श्रीमान् डाक्टर तासीर मुज्तबा साहिब के देहांत पर उनका वर्णन और नमाज़-ए-जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 29 अक्तूबर 2021 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

जिन लोगों को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जन्नत की खुशखबरी दी थी उनमें हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु भी थे। हज़रत अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ मदीना के बाग़ों में से एक बाग़ में था इतने में एक व्यक्ति आया और उसने दरवाज़ा खोलने के लिए कहा। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाया : उस के लिए दरवाज़ा खोलो और उस को जन्नत की खुशखबरी दो। मैं ने उस के लिए दरवाज़ा खोला तो मैं क्या देखता हूँ कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। मैंने उनको इस बात की खुशखबरी दी जो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाई थी। उन्होंने कहा। फिर एक और व्यक्ति आया और उसने दरवाज़ा खोलने के लिए कहा। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया उस के लिए दरवाज़ा खोलो और उस को जन्नत की खुशखबरी दो। मैंने दरवाज़ा खोला तो देखता हूँ कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। मैंने उनको वह बात बताई जो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाई उन्हों اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहा। फिर एक और व्यक्ति आया दरवाज़ा उसने खोलने के लिए कहा। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि उस के लिए दरवाज़ा खोलो और उस को जन्नत की खुशखबरी दो बावजूद एक मुसीबत के जो उसे पहुँचेगी। तो क्या देखता हूँ कि वह हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो हैं। मैंने उनको वह बात बताई जो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाई थी। उन्होंने भी اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहा। फिर कहा मुसीबत से महफ़ूज़ रहने के लिए अल्लाह ही से सहायता मांगी जा सकती है।

(सही अल् बुख़ारी किताब फ़ज़ायल अस्हाबुन नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बाब मनाक़िब उमर बिन अल् ख़त्ताब हदीस 3693)

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन ओफ़ रज़ियल्लाहु अन्हो से मर्वी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु जन्नती हैं। उमर रज़ियल्लाहु अन्हो जन्नती हैं। उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो जन्नती हैं। ये दस आदमीयों के सम्बन्ध में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया था। अली रज़ियल्लाहु अन्हो जन्नती हैं। तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु जन्नती हैं। ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु जन्नती हैं। अब्दुर्रहमान बिन ओफ़ रज़ियल्लाहु अन्हो जन्नती हैं। साद बिन अबी विकास रज़ियल्लाहु अन्हु जन्नती हैं। सईद बिन ज़ेद रज़ियल्लाहु अन्हो जन्नती हैं और अबू उबैदा बिन जराह रज़ियल्लाहु अन्हु जन्नती हैं।

(सुंन अल् तिरमिज़ी किताब अल् मुनाकिब बाब मनाक़िब अबदुर्रहमान बिन औफ़ नंबर 3747)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा एक-बार हम नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मैं सोया हुआ था मैंने अपने आप को जन्नत में देखा तो क्या देखता हूँ कि एक औरत एक महल के पास वुज़ू कर रही है। मैंने पूछा यह महल किस का है? लोगों ने कहा कि उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो का। उनकी ग़ैरत का मुझे ख़्याल आया तो मैं वापिस चला आया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु भी वहां बैठे हुए थे। यह सुन कर आप रज़ियल्लाहु अन्हु रोए और कहा हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! क्या मैं आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से ग़ैरत करूँगा। (सही अल् बुख़ारी كتاب بدء الخلق باب مَا جَاءَ فِي صِفَةِ الْجَنَّةِ وَأَنَّهَا مَخْلُوقَ हदीसा 3242) क्यों वापिस आ गए, बरकत बख़्शते!

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया عِلِّيِّيْن वालों में से कोई व्यक्ति जन्नत वालों पर झाँकेगा तो उस के चेहरे की वजह से जन्नत जगमगा उठेगी मानों एक चमकता हुआ सितारा है। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु भी उन में से हैं और वे दोनों किया ही ख़ूब हैं। (सुंन अबू दाऊद किताब अल्हरूफ़ वल् किरात हदीस 3987)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हो से मर्वी है कि नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम्हारे पास जन्नत वालों में से एक व्यक्ति आ रहा है तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो आए। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया तुम्हारे पास जन्नत वालों में से एक व्यक्ति आ रहा है तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो आए।

(सुंन अल् तिरमिज़ी किताब अल् मुनाकिब बाब अख़बारहू अनिल इतलाअ मिन अहलिल जन्नत पतलअ उमर हदीसा 3694)

इसी तरह एक रिवायत में है हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में फ़रमाया कि यह अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु और उमर रज़ियल्लाहु अन्हु जन्नत के प्राथमिक और अंतिम के समस्त बड़ी उमर के लोगों के सरदार हैं अतिरिक्त अम्बिया और मुर्सलीन के।

(सुंन अल् तिरमिज़ी किताब अल् मुनाकिब बाब इक़तदू बिल्लज़ीन मिन बअदी हदीस 3664)

फिर हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो जन्नत वालों के चिराग़ हैं।

(हिल्यतुल औलिया लेखक इमाम असफहानी,भाग 6 पृष्ठ 309 रिवायत 8950,2007 मक्तबा अल्इमान)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के मुक़ाम के बारे में एक और जो रिवायत है वह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इस प्रकार मर्वी है, हज़रत उक़बा बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया यदि मेरे बाद कोई नबी होता तो ज़रूर उमर बिन ख़त्ताब होते। (सुंन अल् तिरमिज़ी किताब अल् मुनाकिब बाब لو كان نبي بعدى لكان عمر... हदीस 3686) अर्थात यह फ़ौरी बाद नबुव्वत की बात है अन्यथा तो आने वाले मसीह और महदी को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़ुद "नाबिउल्लाह" कह

कर फ़रमाया है।

(सही मुस्लिम किताब ज़िक्रुद्दज्जाल व सिफतहू व मा मअहू हदीस 7373)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को मुहद्दिस कहना। इस बारे में हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा रिवायत करती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि निसंदेह पहली उम्मतों में मुहद्दिसीन होते थे और यदि मेरी उम्मत में कोई है तो वह उमर बिन ख़त्ताब हैं।

(सुंन अल् तिरमिज़ी किताब अल् मुनाकिब बाब कद काना यकूनो फिल उमम महद्देसू ...हदीस 3693)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम से पहले जो उम्मतें थीं उनमें ऐसे लोग थे जो मुहद्दिस हुआ करते थे और यदि मेरी उम्मत में से कोई ऐसा है तो वह उमर रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। मुहद्दिस वह हैं जिनको कसरत से इल्हाम और स्वपन होते हैं। फिर फ़रमाया तुमसे पहले जो बनी इस्राईल से हूए हैं उनमें ऐसे आदमी आ चुके हैं जिनसे अल्लाह कलाम किया करता था बग़ैर उसके कि वह नबी होते थे। यदि मेरी उम्मत में भी उनमें से कोई ऐसा है तो वह उमर रज़ियल्लाहु अन्हु हैं।

(सही अल् बुख़ारी किताब फज़ायल असहाबुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मनाक़िब उमर बिन ख़त्ताब हदीस 3689)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैंम : "ख़ुदा तआला हमेशा इस्तिआरों से काम लेता है और तबा और ख़ासीयत और इस्तिदाद के लिहाज़ से एक का नाम दूसरे पर वारिद कर देता है। जो इबराहीम के दिल के अनुसार दिल रखता है वह ख़ुदा तआला के नज़दीक इबराहीम है और जो उमर फ़ारूक रज़ियल्लाहु अन्हो का दिल रखता है वह ख़ुदा तआला के नज़दीक उमर फ़ारूक़ है। क्या तुम यह हदीस पढ़ते नहीं कि यदि इस उम्मत में भी मुहद्दिस हैं जिन से अल्लाह तआला वार्ता करता है तो वह उमर रज़ियल्लाहु अन्हु है।

अब क्या इस हदीस के यह अर्थ हैं कि मोहद्दसियत हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु पर ख़त्म हो गई? कदापि नहीं। बल्कि हदीस का अर्थ यह है कि जिस व्यक्ति की रुहानी हालत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की रुहानी हालत के अनुसार हो गई वही ज़रूरत के वक़्त पर मुहद्दिस होगा फिर आप अलैहिस्सलाम फ़रमाता हैं "इसलिए इस विनीत को भी एक मर्तबा इस बारे में इल्हाम हुआ था فِيْكَ مَادَّةٌ فَارُوْقِيَّةٌ۔"

(फ़तह इस्लाम, रुहानी ख़ज़ायन भाग 3 पृष्ठ 11 हाशिया)

पूरा इल्हाम इस तरह है कि "اَنْتَ مُحَدَّثُ اللهِ فِيْكَ مَادَّةٌ فَارُوْقِيَّةٌ' अर्थात "तू मुहद्दिसुल्लाह है तुझ में मायदा फ़ारूक़ी है।"
(वर्णन पृष्ठ 82 ऐडीशन 4)

जैसा कि पहले भी मैं पिछले कई ख़ुतबात में से एक ख़ुतबे में वर्णन कर चुका हूँ कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हिफ़ाज़त और तदवीन क़ुरआन की तजवीज़ दी थी। इस बारे में यहां पर भी वर्णन करता हूँ। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के समय में जंग यमामा में जब सत्तर क़ुरआन के हाफिज़ शहीद हुए तो इस बारे में हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हो अंसारी रिवायत करते हैं कि जब यमामा के लोग शहीद किए गए तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुझे बुला भेजा और इस वक़्त उनके पास हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु थे। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाया : उमर रज़ियल्लाहु अन्हु मेरे पास आए हैं और उन्होंने कहा यमामा की जंग में लोग बहुत शहीद हो गए हैं और मुझे अंदेशा है कि कहीं और लड़ाईयों में भी क़ारी न मारे जाएं और इस तरह क़ुरआन का बहुत सा हिस्सा नष्ट हो जाएगा अतिरिक्त इस के कि तुम क़ुरआन को एक जगह जमा कर दो और मेरी यह राय है कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु क़रान को एक जगह जमा करें। अर्थात हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा मेरी यह राय है कि यह क़ुरआन को जमा करें। इस पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को फ़रमाया कि मैं ऐसी बात कैसे करूँ जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नहीं की। उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि अल्लाह की क़सम आप रज़ियल्लाहु अन्हु का यह काम अच्छा है। फिर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि उमर रज़ियल्लाहु अन्हु मुझे बार-बार यही कहते रहे यहां तक कि अल्लाह तआला ने इस के लिए मेरा सीना खोल दिया और अब में भी वही मुनासिब समझता हूँ जो उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुनासिब समझा अर्थात उस की तदवीन हो जानी चाहिए और फिर ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस की तदवीन का काम शुरू किया।

(उद्धरित सही अल् बुख़ारी किताब अलतफ़सीर बाब قوله لقد جاء كم رسول من انفسكم ... हदीस 4679)

इस की तफ़सील जैसा कि मैं ने कहा पहले मैं वर्णन कर चुका हूँ।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के क़ुरआन-ए-करीम हिफ़्ज़ करने के बारे में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि "अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुहाजिर सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु में से मुंदरजा ज़ैल का हिफ़्ज़ साबित है। अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु, उमर रज़ियल्लाहु अन्हु, उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो, अली रज़ियल्लाहु अन्हु, तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु, साद रज़ियल्लाहु अन्हु, इब्ने मसूद रज़ियल्लाहु अन्हो, हुज़यफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु, सालिम रज़ियल्लाहु अन्हु, अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो, अब्दुल्लाह बिन सायब रज़ियल्लाहु अन्हु, अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु, अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु।"

(दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन, अनवारुल उलूम रज़ियल्लाहु अन्हु भाग20 पृष्ठ 429)

यह भी कहा जाता है कि वह्यी जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर हुईं उनकी वजह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की मवाफ़कत है या हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की इन वह्यी से मवाफ़कत है। सहा सित्ता की रिवायत में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की मवाफ़कात का वर्णन जिन अहादीस में आया है वहां तीन बातों में मवाफ़कत का वर्णन मिलता है जबकि यदि केवल सहा सित्ता की इन रवायात को एक साथ देखा जाए तो उनकी संख्या सात तक बनती है। सही बुख़ारी में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से एक रिवायत मर्वी है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा तीन बातों में मेरी राय मेरे रब के मंशा के अनुसार हुई। मैं ने कहा हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! यदि हम मुक़ाम-ए-इबराहीम को नमाज़ गाह बना लें। यह मैंने कहा तो आयत وَ اتَّخِذُوْا مِنْ مَّقَامِ اِبْرٰهٖمَ مُصَلًّى ن नाज़िल हुई। और पर्दे का हुक्म। मैंने कहा तो पर्दे का हुक्म नाज़िल हुआ। मैं ने कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यदि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम आपनी पत्नियों को पर्दा करने का हुक्म दें क्योंकि उनसे भले भी और बुरे भी बातें करते हैं तो पर्दे की आयत नाज़िल हुई। फिर नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पत्नियों ने ग़ैरत के कारण आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सम्बन्ध में एका किया तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं मैं ने उन्हें कहा अर्थात उन पत्नियों को जिनमें उनकी बेटी भी थीं कि यदि तुम्हें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तलाक़ दे दें तो मुझे उम्मीद है कि उनका रब तुम से बेहतर पत्नियाँ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बदले में देगा। इस पर यह आयत नाज़िल हुई عَسٰى رَبُّهٗۤ اِنْ طَلَّقَكُنَّ اَنْ يُّبْدِلَهٗۤ اَزْوَاجًا خَيْرًا مِّنْكُنَّ। अर्थात क़रीब है कि यदि वह तुम्हें तलाक़ दे दे तो उस का रब तुम्हारे बदले उस के लिए तुमसे बेहतर पत्नियाँ ले आए।

(सही अल् बुख़ारी किताब الصلوٰة باب ما جاء فى القبلة ... हदीस नंबर 402)

सही मुस्लिम में एक रिवायत है कि हज़रत इब्ने उमर वर्णन करते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि तीन अवसरों पर मैं ने अपने रब से मवाफ़कत की। मुक़ाम-ए-इबराहीम के बारे में और पर्दे के बारे में और बदर के क़ैदियों के बारे में।

(सही मुस्लिम किताब फ़ज़ायल अलसहाब मिन फज़ाइल उमर हदीस नंबर 6206)

लेकिन बदर के क़ैदियों के बारे में रिवायत दरुस्त नहीं है। इस पर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी बड़ी बेहस की है। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी कुछ सबूतों से लिखा है। पुराने उल्मा और मुफ़स्सिरीन ने भी लिखा है और यह साबित किया है कि बदर के क़ैदियों को सज़ा देने वाली रिवायत सही नहीं है और इस की जो तफ़सील है मैं पीछे एक ख़ुतबे में वर्णन कर चुका हूँ।

सही मुस्लिम में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का मुनाफ़ेक़ीन का जनाज़ा न पढ़ने के बारे में क़ुरआन की वह्यी से मवाफ़कत का वर्णन मिलता है। हज़रत इब्ने उमर वर्णन करते हैं कि जब अब्दुल्लाह बिन अबी बिन सलूल मरा तो उस का बेटा अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और हुज़ूर से निवेदन किया कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उस को अपनी क़मीज़ अता फ़रमाएं ताकि वह उस में अपने बाप को कफ़न दे। इसलिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे क़मीज़ अता फ़रमाई। फिर उसने

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से निवेदन किया कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम आस की नमाज़ जनाज़ा पढ़ाऐं तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम गए ताकि उस की नमाज़ जनाज़ा पढ़ाऐं। इस पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु खड़े हुए और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कपड़े को पकड़ लिया और अर्ज़ किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! क्या आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम इस की नमाज़ जनाज़ा पढ़ने लगे हैं हालाँकि अल्लाह ने आपको इस पर नमाज़ पढ़ने से मना किया है। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अल्लाह तआला ने मुझे इख़तियार दिया है और फ़रमाया है اِسۡتَغۡفِرۡ لَهُمۡ اَوۡ لَا تَسۡتَغۡفِرۡ لَهُمۡ कि तू उनके लिए इस्तिग़फ़ार कर या न कर। यदि तू उनके लिए सत्तर मर्तबा भी इस्तिग़फ़ार करेगा तो फ़रमाया कि मैं सत्तर से ज़्यादा दफ़ा इस्तिग़फ़ार कर लूँगा। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा वह मुनाफ़िक़ है परन्तु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसकी नमाज़ जनाज़ा पढ़ाई तब अल्लाह अज्ज़ा व् जल्ला ने यह आयत उतारी وَلَا تُصَلِّ عَلٰٓى أَحَدٍ مِّنۡهُمۡ مَّاتَ اَبَدًا। और तू उन में से अर्थात मुनाफ़क़ीन में से किसी मरने वाले की कभी जनाज़े की नमाज़ न पढ़ और कभी उनकी क़ब्र पर दुआ के लिए खड़ा न हो। (सही मुस्लिम किताब अल्फ़ज़ायल अल्सहाब मिन फ़ज़ायल उमर हदीस नंबर 6207)

शराब की हुर्मत के बारे में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की वह्यी क़ुरआन से मवाफ़कत का वर्णन सुंन तिरमिज़ी में मिलता है। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो ने दुआ की कि हे अल्लाह शराब के बारे में हमारे लिए इतमीनान बख़श हुक्म वर्णन फ़र्मा तो सूर: बक़रा की आयत يَسۡـَٔلُوۡنَكَ عَنِ الۡخَمۡرِ وَ الۡمَيۡسِرِ ن नाज़िल हुई। वह तुझ से शराब और जुए के सम्बन्ध में प्रश्न करते हैं। तू कह दे कि इन दोनों में बड़ा गुनाह भी है और लोगों के लिए फ़वायद भी और दोनों का गुनाह का पहलू उन के फ़ायदे से बढ़कर है। जब यह आयत नाज़िल हो चुकी तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को यह आयत पढ़ कर सुनाई गई। यह आयत सुन कर उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फिर कहा अल्लाह! हमारे लिए शराब का वाज़िह हुक्म वर्णन फ़र्मा तो सूर: निसा की आयत لَا تَقۡرَبُوا الصَّلٰوةَ وَ اَنۡتُمۡ سُكٰرٰى नाज़िल हुई कि हे वे लोगो जो ईमान लाए हो तुम नमाज़ के क़रीब न जाओ जब तुम पर मदहोशी की कैफ़ीयत हो यहां तक कि इस काबिल हो जाओ कि तुम्हें इलम हो कि तुम क्या कह रहे हो। उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फिर आए और उन्हें यह आयत पढ़ कर सुनाई गई। उन्होंने फिर कहा अल्लाह! हमारे लिए शराब का हुक्म साफ़ साफ़ वर्णन फ़र्मा दे तो सूर: मायदा की आयत اِنَّمَا يُرِيۡدُ الشَّيۡطٰنُ اَنۡ يُّوۡقِعَ بَيۡنَكُمُ الۡعَدَاوَةَ وَ الۡبَغۡضَآءَ فِى الۡخَمۡرِ وَ الۡمَيۡسِرِ وَ يَصُدَّكُمۡ عَنۡ ذِكۡرِ اللّٰهِ وَ عَنِ الصَّلٰوةِ فَهَلۡ اَنۡتُمۡ مُّنۡتَهُوۡنَ۔ शैतान तो यही चाहता है कि शराब और जुए के माध्यम से तुम्हारे मध्य दुश्मनी और बुग़ज़ पैदा कर दे और तुम्हें ख़ुदा का वर्णन और नमाज़ से बाज़ रखे तो क्या तुम बाज़ आ जाने वाले हो। उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फिर आए और यह आयत पढ़ कर उनको सुनाई गई तो उन्होंने कहा हम रुके रहे। हम रुके रहे।

(सुंन अल् तिरमिज़ी किताब तफ़सीर अल्क़ुरआन, बाब ومن سورة المائدة,हदीस नंबर 3049)

सहा सित्ता में मज़कूर इन मवाफ़कात के अतिरिक्त भी सीरत निगारों ने मुतअद्दिद मवाफ़कात का वर्णन किया है। इसलिए अल्लामा सियूती ने बीस के क़रीब मवाफ़कात का वर्णन किया है। (तारीख़ अल्-खुलफ़ा पृष्ठ 98 दारुल किताब अल् अरबी बेरूत 1999 ई.)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम वर्णन फ़रमाते हैं कि "हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का दर्जा जानते हो कि सहाबा में किस क़दर बड़ा है यहां तक कि कभी कबार उनकी राय के अनुसार क़ुरआन शरीफ़ नाज़िल हो जाया करता था और उनके हक़ में यह हदीस है कि शैतान उमर के साया से भागता है। दूसरी यह हदीस है कि यदि मेरे बाद कोई नबी होता तो उमर होता। तीसरी यह हदीस है कि पहली उम्मतों में मुहद्दिस होते रहे हैं यदि इस उम्मत में कोई मुहद्दिस है तो वह उमर है।"

(इज़ाला औहाम हिस्सा अव्वल, रुहानी ख़ज़ायन भाग 3 पृष्ठ 219)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का ग़ज़वात में मश्वरा देना और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का उसे क़बूल फ़रमाना, इस बारे में रिवायत है कि हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो या हज़रत अबू साईंद रज़ियल्लाहु अन्हो जो रिवायत करने वाले हैं। अमश को संदेह है कि उनमें से कौन था। बहरहाल वे कहते हैं उनसे रिवायत है कि जब ग़ज़वा तबूक के दिन थे तो लोगों को सख़्त भूक लगी उन्होंने कहा हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यदि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हमें आज्ञा दें तो हम अपने पानी लाने वाले ऊंट ज़िबह कर लें और हम खाएं और चिकनाई इस्तिमाल करें। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कर लो। कहते हैं इस पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु आए और अर्ज़ किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! यदि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ऐसा किया तो सवारियां कम हो जाएँगी। हाँ लोगों को अपना बाक़ीमांदा आहार लाने का इरशाद फ़रमाएं। जो कुछ भी किसी के पास खाने की चीज़ है वे ले आए। फिर उनके लिए इस पर बरकत की दुआ करें। बईद नहीं कि अल्लाह तआला इस में बरकत रख दे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हाँ यह ठीक है। रावी कहते हैं कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक चमड़े का दस्तरखान मंगवाया और उसे बिछा दिया और फिर उनके बचा कुचा आहार मंगवाया। जो भी खाने का सामान था वह मंगवाया। रावी कहते हैं कोई मुट्ठी भर मकई लाया, कोई मुट्ठी भर खजूरें, कोई रोटी का टुकड़ा इत्यादि ले आया यहां तक कि इस दस्तरखान पर इस में से कुछ थोड़ा सा इकट्ठा हो गया। रावी कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस पर बरकत की दुआ की। फिर फ़रमाया अपने बर्तनों में ले लो। उन्होंने बर्तनों में इस को ले लिया यहां तक कि लश्कर में कोई बर्तन नहीं छोड़ा परन्तु उस को भर लिया। फिर सब ने खाया और सैर हो गए और कुछ बच भी गया। तब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाया : मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई माबूद नहीं और मैं अल्लाह का रसूल हूँ और जो व्यक्ति बग़ैर किसी शक के इन दोनों शहादतों के साथ ख़ुदा से मिलेगा वह जन्नत से रोका नहीं जाएगा। यह मुस्लिम की रिवायत है।

(सही मुस्लिम किताब الایمان باب الدلیل علی ان من مات علی التوحید ... हदीस 139)

बुख़ारी में यह रिवायत इस तरह दर्ज है। यज़ीद बिन अबू उबैद ने हज़रत सलमा बिन अक्वा रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत की कि उन्होंने कहा कि एक सफ़र में लोगों के मार्गव्यय कम हो गए और उनके पास कुछ नहीं रहा और वह नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास अपने ऊंट ज़बह करने के लिए आज्ञा मांगने आए। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन्हें आज्ञा दे दी। फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु उन लोगों से मिले और उन्होंने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को बताया तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा अपने ऊंटों के बाद तुम कैसे गुज़ारा करोगे? यह कह कर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास गए और कहा हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! वे अपने ऊंटों के बाद कैसे गुज़ारा करेंगे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया लोगों में मुनादी करो कि सब अपना बचा हुआ आहार ले आएं। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दुआ की और इस आहार को बरकत दी। फिर उनके बर्तन मंगवाए और लोगों ने भर भर कर लेना शुरू किया यहां तक कि जब वह फ़ारिग़ हो गए तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं शहादत देता हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं और मैं अल्लाह का रसूल हूँ।

(सही अल् बुख़ारी किताब الجهادوالسیرباب حمل الزادفی الغزو हदीस 2982)

अज़ान की जो इबतिदा हुई है इस बारे में भी हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने स्वप्न देखा था।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन फ़रमाते हैं कि "अल्लाह तआला की वही सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु पर नाज़िल हुई। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने में अब्दुल्लाह बिन ज़ेद रज़ियल्लाहु अन्हो एक सहाबी थे। अल्लाह तआला ने उनको वह्यी के द्वारा से अज़ान सिखाई थी और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्ही की वह्यी पर इन्हिसार करते हुए मुस्लमानों में अज़ान का रिवाज डाला था। बाद में क़ुरआन की वह्यी ने भी इस की तसदीक़ कर दी। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मुझे भी ख़ुदा तआला ने यही अज़ान सिखाई थी परन्तु बीस दिन तक मैं ख़ामोश रहा इस ख़्याल से कि एक और व्यक्ति रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से यह बात वर्णन कर चुके हैं। एक रिवायत में यह भी है कि एक फ़रिश्ते ने मुझे आकर अज़ान सिखाई और मैं उस वक़्त पूरी तरह सोया हुआ नहीं था" यह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया। "कुछ-कुछ जाग रहा था।" (मसला वह्यी नबुव्वत के सम्बन्ध में इस्लामी नज़रिया, अनवारुल उलूम भाग 23 पृष्ठ 282)

सुंन तिरमिज़ी की रिवायत है जो मैं पहले भी वर्णन कर चुका हूँ लेकिन यहां भी

वर्णन कर देता हूँ। इस के आख़िर में जो शब्द हैं वे बताते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के नज़दीक हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के ख़ाब की कितनी महत्वता थी। मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन ज़ैद अपने पिता से रिवायत करते हैं कि हम सुबह के वक़्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आए और मैं ने आपको ख़ाब सुनाई। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाया: निसंदेह यह स्वप्न सच्चा है। तुम बिलाल के साथ जाओ। निसंदेह वह तुम में से ऊंची और लंबी आवाज़ वाले हैं। उनको बताते जाओ जो तुम्हें बताया गया है। अत: वह इस की मुनादी करे। आप रज़ियल्लाहु अन्हु अर्थात अब्दुल्लाह बिन ज़ेद रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि जब हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो नमाज़ के लिए हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हो की अज़ान सुनी तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास अपनी चादर घसीटते हुए आए और आप रज़ियल्लाहु अन्हु यह कह रहे थे कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! उस ज़ात की क़सम जिस ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को हक़ के साथ भेजा है निसंदेह मैं ने भी वही देखा है जैसा उसने अज़ान में कहा है। रावी कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अत: समस्त प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है। अत: यह बात ज़्यादा पुख़्ता है। (सुंन अल् तिरमिज़ी, किताब अस्सलात, बाब मा जाअ फी बदअल- अज़ाना हदीस 189) अर्थात अब मज़ीद तसदीक़ हो गई।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अदब और एहतिराम किस तरह किया करते थे। क्या स्थान था आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का? इस बारे में हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि वह अर्थात हज़रत इब्ने उमर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ किसी सफ़र में थे और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के एक ऊंट पर सवार थे जो मुँह-ज़ोर था और नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से, उनकी सवारी से आगे बढ़ जाता था। और उनके पिता हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु उन्हें कहते थे अब्दुल्लाह! नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से आगे किसी को भी नहीं बढ़ना चाहिए। यह तुम्हारी सवारी जो है यह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सवारी से आगे नहीं बढ़नी चाहिए। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया। मेरे पास यह बेच दो। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा यह तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ही का है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे ख़रीद लिया और उस को फ़रमाया: अब्दुल्लाह यह अब तुम्हारा ही है इस से तुम जो चाहो काम लो। (सही अल् बुख़ारी किताबुल हिबत बाब मन अह्दा लहू हद्यता हदीस 2610) ले के फिर तोहफ़ा दे दिया।

हज़रत अनस बिन मालिकरज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब सूरज ढल गया तो तशरीफ़ लाए और ज़ुहर की नमाज़ पढ़ी और मिंबर पर खड़े हुए और वादे वाले समय का वर्णन किया और फ़रमाया इस में बड़े बड़े वाक़ियात होंगे। फिर फ़रमाया जो व्यक्ति कुछ पूछना चाहे तो पूछ ले। तुम जो कुछ भी मुझसे पूछोगे मैं तुम्हें बताऊँगा जब तक कि मैं अपने इस स्थान में हूँ तो लोग बहुत रोय और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कई दफ़ा फ़रमाया कि मुझसे पूछो। इस पर हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा उठे और कहा मेरा बाप कौन है? तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया हुज़ाफ़ा। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने बहुत दफ़ा फ़रमाया कि मुझसे पूछो। इस पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु अपने घुटनों के बल खड़े हो गए और कहा। رَضِيْنَا بِاللهِ رَبًّا، وَبِالْإِسْلَامِ دِيْنًا، وَ بِمُحَمَّدٍ نَبِيًّاك कि हम राज़ी हैं कि अल्लाह हमारा रब है और इस्लाम हमारा दीन और मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हमारे नबी हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ामोश हो गए। फिर फ़रमाया जन्नत और आग अभी इस दीवार की चौड़ाई में मेरे सामने पेश की गई थीं तो मैं ने ऐसा ख़ैर और शर कभी भी नहीं देखा।

(सही अल् बुख़ारी किताब मवाकीतुस्सलात बाब वक्तुज़ज़ुहर इन्दज़्वाल, हदीस 540)

बुख़ारी की ही एक और रिवायत में इस तरह भी वर्णन मिलता है। हज़रत अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है वह कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कुछ ऐसी बातों के सम्बन्ध में पूछा गया जिन को आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने नापसंद किया। जब आप से बहुत प्रश्न किए गया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ग़ुस्सा आया और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने लोगों से कहा पूछो मुझसे जिसके सम्बन्ध में भी चाहो। तब एक व्यक्ति ने कहा मेरा बाप कौन है? फ़रमाया तुम्हारा बाप हज़ाफ़ा है। इस के बाद एक और उठा और उसने कहा हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! मेरा बाप कौन है? आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया तुम्हारा बाप शीबा का आज़ाद करदा ग़ुलाम सालिम है। जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस तग़य्युर को देखा जो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के चेहरे पर था तो उन्होंने कहा हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो वसल्लम! हम अल्लाह के हुज़ूर अपनी ग़लती से रुजू करते हैं।

(सही अल् बुख़ारी किताबुल इल्म बाबुल ग़ज़ब फिल मवाज़अ ... हदीस 92)

फिर बुख़ारी की ही एक दूसरी रिवायत भी है। यह ज़ोहरी से रिवायत है। इस में आता है। वह कहते हैं कि हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हो ने मुझे बतलाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बाहर निकले तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा खड़े हो गए और उन्होंने कहा हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरा बाप कौन है? आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया तुम्हारा बाप हज़ाफ़ा है। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने बहुत दफ़ा फ़रमाया पूछो मुझ से।परन्तु हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने दौ ज़ानू हो कर अर्ज़ किया और उन्होंने कहा हम राज़ी हैं कि अल्लाह हमारा रब है और इस्लाम हमारा दीन है और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमारे नबी हैं। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ख़ामोश हो गए।

(सही अल् बुख़ारी किताबुल इल्म बाब मन बरक अला रक्बतैही इन्दल इमाम अऔ महद्दिस , हदीस 93)

हज़रत अबू क़तादा अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के रोज़े के बारे में प्रश्न किया गया। रावी कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नाराज़ हुए तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा हम अल्लाह तआला के रब होने पर और इस्लाम के दीन होने पर और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के रसूल होने पर और अपनी बैअत के हक़ीक़ी बैअत होने पर राज़ी हैं। (सही मुस्लिम किताब الصيام باب استحباب صيام ثلاثة ايام من كل شهر و صوم يوم عرفة ... हदीस 2747)

सही बुख़ारी में एक और रिवायत है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु एक दफ़ा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आए। उस वक़्त आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक बाला ख़ाने में ठहरे हुए थे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं मैं आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास गया। क्या देखता हूँ कि आप एक चटाई पर लेटे हुए हैं। आपके और चटाई के मध्य कोई बिछौना नहीं। इसलिए चटाई ने आपके पहलू पर निशान डाले हुए हैं। एक चमड़े के तकिए पर टेक लगाए हुए हैं जिस में खजूर की छाल भरी हुई है। मैंने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के घर की तरफ़ आँख उठा कर देखा तो अल्लाह की क़सम तीन कच्ची खालों के अतिरिक्त वहां कोई चीज़ नहीं थी जो मुझे नज़र आई हो। मैं ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कहा। अल्लाह से दुआ करें कि वह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की उम्मत को कुशाईश दे क्योंकि फ़ारस और रुम को बहुत दौलत दी गई है और उन्हें दुनिया मिली है हालाँकि वह अल्लाह की इबादत नहीं करते। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तकिया लगाए बैठे थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ख़त्ताब के बेटे क्या अभी तक तुम शक में हो। वे ऐसे लोग हैं जिनको जल्दी से इस दुनिया की ज़िंदगी में ही उनके मज़े की जो चीज़ें थीं दी गई हैं। मैं ने कहा हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरे लिए मग़फ़िरत की दुआ करें। (सही अल् बुख़ारी किताब المظالم باب الغرفة والعلية المشرفة و غير المشرفة... हदीस 2468)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : "एक दफ़ा हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के घर में गए और देखा कि घर में कुछ अस्बाब नहीं और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम एक चटाई पर लेटे हुए हैं और चटाई के निशान पीठ पर लगे हैं। तब उमर को यह हाल देखकर रोना आया। फ़रमाया : हे उमर तू क्यों रोता है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ की कि आपकी तकालीफ़ को देख कर मुझे रोना आ गया। क़ैसर और किसरा जो काफ़िर हैं आराम की ज़िंदगी बसर कर रहे हैं और आप इन तकालीफ़ में बसर करते हैं। तब आप ने फ़रमाया कि मुझे इस दुनिया से क्या काम मेरी मिसाल उस सवार की है कि जो गर्मी की अधिकता के समय ऊंटनी पर जा रहा है और जब दोपहर की शिद्दत ने उस को सख़्त तकलीफ़ दी तो वे उसी सवारी की हालत में दम लेने के लिए एक दरख़्त के साया के नीचे ठहर गया और फिर चंद मिनट के बाद

उसी गर्मी में अपनी राह ली।"

(चशमा मार्फ़त, रुहानी ख़ज़ायन भाग 23 पृष्ठ 299 - 300)

एक वाक़िया मिलता है जिस में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को दुआ के लिए कहा था। हज़रत उमर फ़रमाते हैं कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से उमरा अदा करने की आज्ञा चाही तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे आज्ञा दी और फ़रमाया لَا تَنْسَنَا يَا أُخَيَّ مِنْ دُعَائِكَ ,,हे मेरे भाई! हमें अपनी दुआ में न भूलना। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि यह ऐसा कलिमा है कि यदि मुझे उस के बदले में सारी दुनिया भी मिल जाए तो इतनी ख़ुशी न हो। एक और रिवायत में यह शब्द इस तरह आते हैं कि اَشْرِكْنَا يَا أُخَيَّ فِيْ دُعَائِكَ कि हे मेरे भाई हमें अपनी दुआ में शामिल रखना।

(सुंन अबू दाऊद किताब الوترباب الدعاء हदीस 1498)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो का रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से किस हद तक आशिक़ाना ताल्लुक़ था इस का पता इस वाक़िया से मिलता है। पहले भी एक ख़ुतबा में वर्णन हो चुका है। इस बारे में हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़ौत हो गए तो यह ख़बर सुन कर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु खड़े हुए और कहने लगे अल्लाह की क़सम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़ौत नहीं हुए। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती थीं हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहा करते थे बख़ुदा मेरे दिल में यही बात आई थी और उन्होंने कहा अल्लाह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को ज़रूर ज़रूर उठाएगा। अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ज़रूर उठाएगा ताकि कुछ आदमियों के हाथ पांव काट दे। बहरहाल फिर जब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु आए तो उन्होंने सूर: आले इमरान आयत 145 पढ़ी और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को हक़ीक़त को समझने का कहा और फिर मुआमला ख़त्म हुआ।

(सही अल् बुख़ारी किताब فضائل اصحاب النبیﷺ باب قول النبیﷺ لو كنت متخذا خليلا हदीस 3667-3668)

इस बारे में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं "आँहज़रत के देहांत पर सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु का इजमा भी इसी विषय पर हुआ है कि समस्त अम्बिया वफ़ात पा गए हैं और इस की यह वजह हुई कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के देहांत पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़्याल पैदा हो गया था कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अभी ज़िंदा हैं और दुबारा तशरीफ़ लाएँगे और आप रज़ियल्लाहु अन्हु को अपने इस एतिक़ाद पर इस क़दर यक़ीन था कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु उस व्यक्ति की गर्दन उड़ाने को तैयार थे जो उस के ख़िलाफ़ कहे लेकिन हज़रत सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु जब तशरीफ़ लाए और आपने समस्त सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु के सामने यह आयत पढ़ी कि وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْل قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِه الرُّسُلُ तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मेरे पांव काँप गए और मैं सदमें के मारे ज़मीन पर गिर गया और सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हमें यूं मालूम हुआ कि जैसे यह आयत आज ही उत्तरी है और हम उस दिन इस आयत को बाज़ारों में पढ़ते फिरते थे। अत: यदि कोई नबी ज़िंदा मौजूद होता तो यह इस्तिदलाल दरुस्त नहीं था कि जब सब नबी फ़ौत हो गए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम क्यों फ़ौत न होते। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कह सकते थे कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु क्यों धोखा देते हैं। हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम अभी ज़िंदा आसमान पर बैठे हैं। वह ज़िंदा हैं तो क्यों हमारे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ज़िंदा नहीं रह सकते? परन्तु सब सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़ामोशी इस बात पर दलालत करता है कि सब सहाबा का यही मज़हब था कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम देहांत पा चुके हैं।''

(तौहफा तुल-मलूक अनवारुल उलूम भाग 2 पृष्ठ 128)

इस बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी वर्णन फ़रमाया है वह तफ़सील मैं पहले एक ख़ुतबा में वर्णन कर चुका हूँ।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु किस तरह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पैरवी करते थे इस बारे में हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज्र-ए-अस्वद की तरफ़ मुँह किया। फिर अपने होंट इस पर रख दिए और देर तक रोते रहे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुड़ कर देखा तो हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो को भी रोते पाया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया उमर! यह वह जगह है जहां आँसू बहाए जाते हैं।

(सुंन इब्ने माजा किताब كتاب المناسك باب استلام الحجر हदीस 2945)

आबस ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि वह हिज्र-ए-अस्वद के पास आए और उस को चूमा और कहा मैं ख़ूब जानता हूँ कि तू एक पत्थर ही है न नुक़्सान दे सकता है न लाभ। यदि मैं ने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को तुझे चूमते नहीं देखा होता तो तुझे कदापि न चूमता।

(सही अल् बुख़ारी किताब الحج باب ما ذكر فی الحجر الاسود हदीस 1597)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि "हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु एक दफ़ा तवाफ़ कर रहे थे कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु अस्वाद के पत्थर के पास से गुज़रे और आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस से अपनी सोटी ठुकरा कर कहा कि मैं जानता हूँ तू एक पत्थर है और तुझ में कुछ भी ताक़त नहीं परन्तु मैं ख़ुदा के हुक्म के अधीन तुझे चूमता हूँ। यही तौहीद की भावना थी जिसने उनको दुनिया में सर बुलंद किया। वह ख़ुदाए वाहिद की तौहीद के कामिल आशिक़ थे। वह यह बर्दाश्त ही नहीं कर सकते थे कि इस की ताक़तों में किसी और को शरीक किया जाए।" अर्थात ख़ुदा तआला की ताक़तों में। "बेशक वह हज्र-ए-अस्वद का अदब भी करते थे परन्तु इसलिए कि ख़ुदा तआला ने कहा है इस का अदब करो, न इसलिए कि हज्र-ए-अस्वद के अंदर कोई ख़ास बात है। वह समझते थे कि यदि ख़ुदा तआला हमें किसी हक़ीर से हक़ीर चीज़ को चूमने का हुक्म दे दे तो हम उस को चूमने के लिए भी तैयार हैं क्योंकि हम ख़ुदा तआला के बंदे हैं किसी पत्थर या मकान के बंदे नहीं। अत: वह अदब भी करते थे और तौहीद को भी नज़र अंदाज नहीं होने देते थे और यही एक सच्चे मोमिन का स्थान है। एक सच्चा मोमिन बैतुल्लाह को वैसा ही पत्थरों का एक मकान समझता है जैसे दुनिया में और हज़ारों मकान पत्थरों के बने हुए हैं। एक सच्चा मोमिन हज्र-ए-अस्वद को वैसा ही पत्थर समझता है जैसे दुनिया में और करोड़ों पत्थर मौजूद हैं परन्तु वह बैतुल्लाह का अदब भी करता है। वह हज्र-ए-अस्वद को चूमता भी है क्योंकि वह जानता है कि मेरे रब ने इन चीज़ों के अदब करने का मुझे हुक्म दिया है परन्तु बावजूद इस के वह इस मकान का अदब करता है। बावजूद इस के कि वह हज्र-ए-अस्वद को चूमता है फिर भी वह इस यक़ीन पर पूरी मज़बूती के साथ क़ायम होता है कि मैं ख़ुदाए वाहिद का बंदा हूँ किसी पत्थर का बंदा नहीं। यही हक़ीक़त थी जिसका हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने इज़हार फ़रमाया। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज्र-ए-अस्वद को सोटी मारी और कहा मैं तेरी कोई हैसियत नहीं समझता। तू वैसा ही पत्थर है जैसे और करोड़ों पत्थर दुनिया में नज़र आते हैं परन्तु मेरे रब ने कहा है कि तेरा अदब किया जाए इसलिए मैं अदब करता हूँ। यह कह कर वह आगे बढ़े और उस पत्थर को बोसा दिया।"

(तफ़सीर-ए-कबीर भाग 10 पृष्ठ 130)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पूछा जबकि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तावाफ से वापिस आने के बाद जयरान थे और अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! मैं ने जाहिलियत में मस्जिद हराम में एक रोज़ एतिकाफ़ करने की नज़र मानी थी। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का क्या इरशाद है? फ़रमाया : जाओ और एक दिन का एतिकाफ़ करो। बहर हाल जो जायज़ नज़र है वह किसी भी ज़माने में हो उसे पूरा करना चाहिए। यह सबक़ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दिया। फिर रावी कहते हैं कि एक दफ़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें ख़ुमस में से एक लड़की दी। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने लोगों के क़ैदी आज़ाद किए और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनकी आवाज़ें सुनें और वह कह रहे थे कि हमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आज़ाद कर दिया तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूछा क्या बात है? उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने लोगों के क़ैदी आज़ाद कर दिए हैं तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने बेटे को कहा कि अब्दुल्लाह! तुम उस लड़की के पास जाओ जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दी थी और उसे आज़ाद कर दो। (सही मुस्लिम किताब الایمان باب نذر الکافر وما یفعل فیه اذا اسلم हदीस 4294)

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हो को नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का राज़दार कहा जाता था। ग़ज़वा-ए-तबूक के दौरान का एक वाक़िया है कि हज़रत हुज़यफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपनी सवारी से नीचे उतरे तो उस वक़्त आप सल्लल्लाहो अलैहि व

सल्लम पर वह्यी नाज़िल हुई। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सवारी बैठी हुई थी तो वह खड़ी हो गई और उसने अपनी महार को खींचना शुरू कर दिया। मैं ने उस की महार पकड़ ली और उसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास ला कर बिठा दिया। फिर मैं उस ऊंटनी के पास बैठा रहा यहां तक कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम खड़े हो गए और मैं उस ऊंटनी को आपके पास ले गया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा कौन है? तो मैं ने जवाब दिया कि हुज़ैफ़ा। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाया : मैं तुम्हें एक राज़ से आगाह करने वाला हूँ और तुम उस का किसी से वर्णन न करना। मुझे अमुक अमुक व्यक्ति की नमाज़ जनाज़ा पढ़ने से मना किया गया है और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुनाफ़क़ीन की एक जमाअत का नाम लिया। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का देहांत हो गया तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के दौर-ए-ख़िलाफ़त में जब कोई व्यक्ति फ़ौत हो जाता जिस व्यक्ति के सम्बन्ध में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु यह समझते थे कि वह मुनाफ़क़ीन की इस जमाअत से ताल्लुक़ रखता है तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु का हाथ पकड़ कर उन्हें नमाज़ जनाज़ा पढ़ने के लिए साथ ले जाते। यदि तू हज़रत हुज़यफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु आप रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ चल पड़ते तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु भी उस व्यक्ति की नमाज़ जनाज़ा अदा कर लेते और यदि हज़रत हुज़यफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु अपना हाथ हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ से छुड़ावा लेते तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु भी उस की नमाज़ जनाज़ा छोड़ देते।

(सीरतुल हल्बिया अनुवादक) भाग 3 निस्फ़ अव्वल पृष्ठ 440-441 प्रकाशन दारुल इशाअत कराची 2009 ई.)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी को ज़ाहिरन पूरा करने के बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम वर्णन फ़रमाते हैं कि "हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु जो सिदक़ इख़लास से भर गए थे उन्होंने यह मज़ा पाया कि उनके बाद ख़लीफ़ा सानी हुए। उद्देश्य इस तरह पर हर एक सहाबी ने पूरी इज़्ज़त पाई। क़ैसर और किसरा के अम्वाल और शाहज़ादियाँ उनके हाथ आए। लिखा है एक सहाबी किसरा के दरबार में गया। मुलाज़िमान किसरा ने सोने चांदी की कुर्सियाँ बिछवा दीं और अपनी शानो शौकत दिखाई। उसने कहा कि हम इस माल के साथ फ़रेफ़्ता नहीं हुए। हम को तो वादा दिया गया है कि किसरा के कड़े भी हमारे हाथ आजाऐंगे। इसलिए हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने वह कड़े एक सहाबी को पहना दिए ताकि वह भविष्यवाणी पूरी हो।"

(मलफ़ूज़ात भाग 2 पृष्ठ 46)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन फ़रमाते हैं कि "सोना पहनना मर्दों के लिए जायज़ नहीं लेकिन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने किसरा के कड़े एक सहाबी को पहनाए और जब उसने उनको पहनने से इंकार किया तो उस को आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने डाँटा और फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था कि तेरे हाथों में मुझे किसरा के कड़े नज़र आते हैं। इसी तरह एक अवसर पर किसरा का ताज और इस का रेशमी लिबास जब माले ग़नीमत के अम्वाल में आया तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक व्यक्ति को उस लिबास और उस ताज के पहनने का हुक्म दिया और जब उसने पहन लिया तो आप रो पड़े फ़रमाया : चंद दिन हुए किसरा इस लिबास को पहन कर और इस ताज को सिर पर रख कर मुल्क ईरान पर जाबिराना हुकूमत करता था और आज वह जंगलों में भागा फिर रहा है। दुनिया का यह हाल होता है। और यह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का कार्य ज़ाहिर इन्सान को शायद सही ज्ञात न हो क्योंकि रेशम और सोना पहनना मर्दों के लिए जायज़ नहीं लेकिन एक नेक बात समझाने और नसीहत करने के लिए हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक व्यक्ति को चंद मिनट के लिए सोना और रेशम पहना दिया। उद्देश्य असल चीज़ अल्लाह का संयम है सब अहकाम अल्लाह का संयम पैदा करने के लिए होते हैं। यदि अल्लाह के संयम के हुसूल के लिए कोई वस्तु जो बज़ाहिर इबादत मालूम होती है छोड़नी पड़े तो वही कार्य सवाब होगा।"

(एक साहिब के पाँच प्रश्नों का जवाब, अनवारुल उलूम भाग 3 पृष्ठ 28)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ख़ाब में मुझे दिखाया गया कि मैं एक कुँवें पर खड़ा डोल से जो चख़र्री पर रखा हुआ था पानी खींच कर निकाल रहा हूँ। इतने में अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु आए और उन्होंने एक या दो डोल खींच कर इस तौर से निकाले कि उनको खिंचने में कमज़ोरी थी और अल्लाह उनकी कमज़ोरी पर पर्दा पोशी करेगा और उनसे दरगुज़र फ़रमाएगा। फिर उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो आए और वह डोल बड़े डोल में बदल गया तो मैंने कोई बहादुर नहीं देखा जो ऐसा हैरत-अंगेज़ काम करता हो जैसा उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने किया। इतना पानी निकाला कि लोग सैर हो गए और अपने अपने ठिकानों पर जा बैठे।

(सही अल् बुख़ारी किताब फ़ज़ायल अस्हाब उन्नबी (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) बाब मनाक़िब उमर बिन अल् ख़त्ताब हदीस 3682)

हज़रत इब्ने उमर ने कहा कि मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुना। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाते थे। एक-बार मैं सोया हुआ था कि इस अस्ना में मेरे पास दूध का एक पियाला लाया गया और मैं ने इतना पिया कि मैं ने उस की तरावत को अपने नाख़ुनों से फूटते हुए देखा।

फिर मैं ने अपना बचा हुआ दूध हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो को दिया। सहाबा ने पूछा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इस की क्या ताबीर फ़रमाई। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाया : ज्ञान।

(सही अल् बुख़ारी किताब अल् इल्म बाब फ़ज़ल अल् इल्म हदीस 82)

हज़रत ज़ैनुल आबेदीन वली उल्लाह शाह साहब रज़ियल्लाहु अन्हो इस हदीस की तशरीह में फ़रमाते हैं कि "फज़लुल ईलम से इस जगह मुराद इलम की फ़ज़ीलत नहीं बल्कि इलम का बच्चा हुआ हिस्सा। फ़ज़ीलत इलम के सम्बन्ध में अलग बाब बाँधा गया है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के स्वप्न और इस की ताबीर से तथा इन वाक़ियात से जिनसे कि इस स्वप्न की तसदीक़ हुई यह इस्तिदलाल करना मक़सूद है कि दुनियावी फ़ुतूहात और अज़मत जो मुस्लमानों को हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के माध्यम से नसीब हुई वह नबी का इल्म का एक बचा हुआ हिस्सा था जो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मिला था। क़ुरआन-ए-मजीद में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को आपकी इस जामे हैसियत के कारण मजमा उलबहरैन (दुनयवी और उखरवी बहबूदी के ज्ञान का जामे) कहा गया है इमाम बुख़ारी ने सियासत को इल्म में शुमार कर के इस तरफ़ इशारा किया है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कामिल रास्ती लाए जो इन्सान के हसनातो दारेन पर हावी है जैसा कि मसीह अलैहिस्सलाम ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सम्बन्ध में भविष्यवाणी की थी कि "जब वह रूह हक़ आएगी तो कामिल सच्चाई लाएगी।" (यूहना बाब 16 आयत 12-13) हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के वाक़ियात का अध्यन करने से इस बचे हुए दूध की हक़ीक़त का पता चल सकता है जो उन्होंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के फ़ैज़ान से पिया।" (सही अल् बुख़ारी अनुवाद व तशरीह अज़ सय्यद ज़ैनुल आबेदीन वली उल्लाह शाह साहिब भाग 1 पृष्ठ 156 - 157)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन फ़रमाते हैं कि "रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने एक दफ़ा हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने ख़ाब की हालत में दूध का पियाला मिलने का वर्णन किया तो आपने फ़रमाया इस से मुराद इलम है।"

(ख़ुतबाते महमूद भाग 23 पृष्ठ 467)

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुना। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाते थे मैं सोया हुआ था मैं ने लोगों को देखा कि मेरे सामने पेश किए गए हैं और उन्होंने क़मीज़े पहनी हुई हैं तो उनमें से कुछ की क़मीज़े छातियों तक पहुँचती हैं और उनमें से कुछ उस के नीचे तक और उमर रज़ियल्लाहु अन्हु भी मेरे सामने पेश किए गए उन्होंने क़मीज़ पहनी हुई थी जिसको वह घसीट रहे थे। सहाबा ने कहा आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इस से क्या मुराद ली तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाया : दीन।

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

(सही अल् बुख़ारी किताब फ़ज़ायल अस्हाब उन्नबी(सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) बाब मनाक़िब उमर बिन ख़त्ताब हदीस 3691)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक अवसर पर मुख़्तलिफ़ सहाबा की विशेषताएं वर्णन फ़रमाते हुए हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के बारे में फ़रमाया कि मेरी उम्मत में से अल्लाह के दीन में सबसे ज़्यादा मज़बूत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु हैं।

(सुंन इब्ने माजा किताब सुन्ना बाब खब्बाब हदीस 154)

हज़रत मालिक बिन मिग़वल से रिवायत है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया अपना मुहासिबा करो पूर्व इस के कि तुम्हारा मुहासिबा किया जाए क्योंकि यह ज़्यादा आसान है। या फ़रमाया तुम्हारे हिसाब के लिए ज़्यादा आसान है और अपने नफ़्स को तोलो क़बल इस के कि तुम्हें तौला जाए और सबसे बढ़कर बड़ी पेशी के लिए तैयारी करो। يَوْمَئِذٍ تُعْرَضُوْنَ لَا تَخْفٰى مِنْكُمْ خَافِيَةٌ अर्थात उस दिन तुम पेश किए जाओगे कोई छुपा रहने वाली तुमसे छुपा नहीं रहेगी।

(ओसोदुल ग़ाबा फ़ी मारेफ़तिल सहाबा भाग 4 पृष्ठ 161प्रकाशन दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2003 ई.)

हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु कभी हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का वर्णन करते तो फ़रमाते। अल्लाह की क़सम जबकि वह पहले इस्लाम लाने वालों में से नहीं थे और न ही अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने वालों में सबसे ज़्यादा अफ़ज़ल थे लेकिन वह दुनिया से बे राग्बती में और अल्लाह तआला के अहकाम के मुआमले में सख़्ती में लोगों पर ग़ालिब थे और अल्लाह के बारे में किसी निंदा करने वाले की निंदा से नहीं डरते थे। (मुसन्निफ़ इब्ने अबी शीबा किताब अलफ़ज़ायल भाग 11 पृष्ठ 120 हदीस 32546 मकतबता अलरुशद नाशेरून अल् रियाज़ 2004 ई.)

हज़रत साद बिन अबी वकास रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि अल्लाह की क़सम! हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो इस्लाम लाने में हम से मुक़द्दम नहीं थे लेकिन मैं ने जान लिया कि आप किस चीज़ में हम से अफ़ज़ल थे। आप रज़ियल्लाहु अन्हु हमारे मुक़ाबले में सबसे ज़्यादा ज़ाहिद और दुनिया से बे रग़बत थे। (मुसन्निफ़ इब्ने अबी शीबा किताब फज़ायल भाग 11 पृष्ठ 121 हदीस 32548 मकतब अलरुशद नाशेरून अल् रियाज़ 2004 ई.)

हिशाम बिन उरूवा अपने पिता से रिवायत करते हैं। वह कहते हैं कि जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु शाम तशरीफ़ लाए तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु की क़मीज़ पीछे से फटी हुई थी। वह एक मोटी और सुन क़मीज़ थी। सुन ऐसी क़मीस जो इतनी लंबी हो कि ज़मीन के साथ लग रही हो और इस तरह की क़मीज रुम की तरफ़ भी मंसूब की जाती है। बहर हाल आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस क़मीज़ को اَذرِعَاتیا اَیْلَه वालों की तरफ़ भेजा। اَیلهشام की तरफ़ एक शहर है और शाम के साथ बहीरा क़ुलज़ुम के साहिल पर वाक़्य एक शहर है। बहरहाल रावी कहते हैं कि अत: उसने इस क़मीस को धोया और इस में पैवंद लगा दिया और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए कुबतरी क़मीज़ भी तैयार कर दी। कुबतरी कत्तान से बना हुआ सफ़ैद बारीक कपड़ा होता है। फिर इन दोनों क़मीज़ो को लेकर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आया और आप रज़ियल्लाहु अन्हु के सामने कुबतुरी क़मीज़ पेश की। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस क़मीज़ को पकड़ा और उस को छुआ और फ़रमाया : यह ज़्यादा नरम है और इस को इसी आदमी की तरफ़ फेंक दिया और फ़रमाया मुझे मेरी क़मीस दे दो क्योंकि वह क़मीज़ो में से पसीना को ज़्यादा चूसने वाली है। (मुसन्निफ़ इब्ने अबी शीबा किताब अल् बऊस वल् सराय भाग 11 पृष्ठ 580-581 हदीस 34427 मकतबा रुशद नशेरून अल् रियाज़ 2004 ई.)(ताजुल उरूस ज़ेर माद्दा सुंबुल) फटी हुई जो तुमने मुरम्मत की है वही बेहतर है।

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि मैं ने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो को उस वक़्त देखा जब आप रज़ियल्लाहु अन्हु अमीरुल मोमेनीन थे कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु के कंधों के मध्य क़मीज़ में तीन चमड़े के पैवंद लगे हुए थे। एक दूसरी रिवायत में है कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं। मैंने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के कंधों के मध्य क़मीज़ में चार चमड़े के पैवंद देखे।

(अल् तबकातुल कुबरा लबनान भाग 3 पृष्ठ 249 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत लुबनान 1990 ई.)

बहरहाल हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का यह वर्णन अभी चल रहा है। इं शा अल्लाह आगे भी वर्णन होगा।

इस वक़्त मैं एक मरहूम का भी वर्णन करना चाहता हूँ और जनाज़ा भी इं शा अल्लाह जुमा की नमाज़ के बाद पढ़ाऊंगा। यह वर्णन है डाक्टर तासीर मुज्तबा साहिब का जो फ़ज़ले उमर हस्पताल में डाक्टर थे। पिछले दिनों सत्तर वर्ष की उमर में उनका देहांत हुआ। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। उनको मुख़्तलिफ़ रोग तो थे लेकिन बहरहाल एक दम उनकी तबीयत ख़राब हुई और उस के बाद फिर बिगड़ गई और उनके देहांत हो गया। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन।

डाक्टर साहिब के ख़ानदान में अहमदियत उनके पिता के कज़न सय्यद फ़खरुल इस्लाम साहिब सहाबी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के माध्यम से आई थी लेकिन डाक्टर तासीर मुज्तबा साहिब के पिता ग़ुलाम मुज्तबा साहिब ने अपनी तालिब इलमी के में 1938 ई. में बैअत की और अहमदी हुए थे। जब हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहम्हुल्लाह नुसरत जहां स्कीम के तहत वक़्फ़ की तहरीक फ़रमाई तो डाक्टर तासीर के पिता डाक्टर ग़ुलाम मुज्तबा साहिब कराची में सिवल-सर्जन के तौर पर काम कर रहे थे तो इस तहरीक पर उन्होंने वहां से पैंशन ली और वक़्फ़ कर के 1970 ई. में अफ़्रीक़ा चले गए और 1999 ई. तक वहां घाना में, नाईजेरिया में, सैरा लियून में ख़िदमात सरअंजाम दी। डाक्टर तासीर मुज्तबा साहिब ने भी अपनी पढ़ाई मुकम्मल करने के बाद मैडीसन की। कुछ देर दो वर्ष के क़रीब फ़ौज में काम किया। फिर सिवल हस्पताल कराची में काम किया। फिर जिनाह हस्पताल कराची में कुछ समय काम किया और 1982 ई. में उन्होंने तीन साल के लिए वक़्फ़ किया तो उनको घाना भिजवा दिया गया। वहां एक टीची मान हस्पताल है यह वहां रहे। यह फिर वहा से कोरे (asokore) हस्पताल में उनको ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। यह हस्पताल उनके पिता ने ही शुरू किया था। उन्होंने अपने पिता के साथ तीन वर्ष काम किया और उनसे ही सर्जरी भी सीखी, वह बड़े अच्छे सर्जन थे। घाना में डाक्टर तासीर साहिब को तक़रीबन तेईस वर्ष ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। इस के बाद सतरह वर्ष फ़ज़ले उमर हस्पताल रब्वाह में उनको ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। इस तरह कल तक़रीबन चालीस वर्ष का अरसा उनको ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली।

उनकी शादी सय्यद दाऊद मुज़फ़्फ़र शाह साहिब और साहबज़ादी अम्तुल हकीम साहिबा की बेटी अम्तुल रऊफ़ से हुई। साहबज़ादी अम्तुल हकीम हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की बेटी थीं। डाक्टर साहिब का एक बेटा और एक बेटी हैं। उनकी बेटी मेरी बहू भी है।

उनकी पत्नी अम्तुल रऊफ़ कहती हैं कि जब मैं बीमारी के दिनों में उनसे मिलने गई हूँ तो उन्होंने कहा कि हुज़ूर को सलाम कहना। मुझे सलाम भिजवाया और कहती हैं इस दफ़ा ऐसा रंग था कि मुझे लगा जैसे कोई अल्विदाईया सलाम कह रहे हैं। फिर लिखती हैं कि घाना में एक दफ़ा बहुत सख़्त बीमार हो गए। बड़ी तकलीफ़ में रात गुज़री और बड़ी ख़तरनाक हालत थी। फ़जर के वक़्त कहने लगे किसी ने सलाम किया है देखो कौन है? मैंने कहा दरवाज़ा बंद है कोई अंदर नहीं आ सकता। एक घंटे के बाद फिर मुझे उन्होंने कहा कि मुझे सलाम की आवाज़ आई है। किसी ने सलाम किया है। और इस के बाद फिर अल्लाह के फ़ज़ल से उनकी तबीयत बेहतर होना शुरू हुई और ठीक हो गए। इस के बाद कहती हैं मैंने उनके लिए दुआ भी की तो इस तरह घाना में मुझे यही बताया गया कि उनकी उमर लंबी होगी। कहती हैं कि बहुत आजिज़, बेनफ़्स और विनम्र इन्सान थे। कभी किसी की बुराई और ग़ीबत या शिकायत नहीं की। यदि कोई कर भी रहा होता तो बिलकुल ख़ामोश रहते।

डाक्टर साहिब के भाई लिखते हैं कि हमने देखा कि मरीज़ों को छुट्टी के बाद भी चैक कर रहे होते थे और कहते यह थे कि बाक़ी डाक्टर क्योंकि कम देखते हैं और मरीज़ हस्पताल में आते हैं तो बजाय इस के कि यह मरीज़ इसी तरह बग़ैर ईलाज के वापस चले जाएं तो इसलिए मैं देख लेता हूँ और बाक़ी डाक्टरों का बोझ भी अपने ऊपर ले लेता हूँ। बहुत शरीफ़ नफ़्स और कम बोलने वाले शख़्सियत के मालिक थे। सैक्योरिटी का अमला और हस्पताल के कारकुनान ने बताया कि हमेशा

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

मुस्कुरा कर हाल पूछा करते और गुज़रते। साधारणत: मरीज़ों से खासतौर पर अहमदियों से उनका बहुत ज़्यादा हुस्न-ए-सुलूक होता था और यदि कोई हस्पताल के वक़्त के अतिरिक्त पास आ जाता तो उमूमन फ़ीस लिए बग़ैर ही अध्यन किया करते थे। जामिआ अहमदिया रब्वाह के प्रिंसिपल मुबश्शिर साहिब लिखते हैं कि कुछ अवसरों पर उनके साथ बैठने की तौफ़ीक़ मिली और बहुत कम बोलने वाले इन्सान थे। बड़ी नरमी से और शगुफ़्तगी से और मुहब्बत से और विनम्रता से बात करते थे और कहते हैं ऐसी आजिज़ी और इनकेसारी और सादगी मैं ने किसी में नहीं देखी। कहते हैं हस्पताल में भी लोगों से, ग़रीब लोगों से भी मैं ने सुना है और ऐसे ऐसे वाक़ियात सुने हैं कि रशक आता था और ख़ुशी भी होती थी कि हस्पताल में ऐसे डाक्टर मौजूद हैं। और फिर कहते हैं जैसा कि पहले वर्णन कर चुका हूँ कि डाक्टर साहिब मरीज़ों को देख लेते थे बल्कि कई दफ़ा हस्पताल का वक़्त ख़त्म हो गया। डाक्टर साहिब उठ कर बाहर चले गए। अपने कमरे से बाहर निकल रहे थे तो फिर कोई मरीज़ आ गया तो कहते हैं इस को वापस अपने कमरे में इस तरह ले के आते थे जैसे उसी का इंतिज़ार कर रहे हूँ। ग़रीबों का ख्याल बहुत ज़्यादा था।

जब मैं 2004 ई. में अफ़्रीक़ा के दौरे पर गया हूँ तो अतहर ज़ुबैर साहिब यहां जर्मनी के चेयरमैन ह्यूमैनिटी फ़रस्ट हैं वह कहते हैं कि घाना में भी और बाक़ी जगहों पर भी डाक्टर साहिब मेरे साथ दौरे पर रहे हैं। बेनिन भी गए थे। अतहरर ज़ुबैर साहिब कहते हैं कि डाक्टर साहिब की एक औरत पर नज़र पड़ी जो कुछ बेचैन सी नज़र आई। डाक्टर साहिब ने मुझ से कहा कि इस से पूछो क्या वजह है? तो उसने कहा कि मैं तो ख़लीफ़तुल मसीह को मिलने आई हूँ। जो कुछ मेरे पास था वह मैंने ख़र्च कर दिया है। वापसी के पैसे मेरे पास नहीं तो डाक्टर साहिब ने अच्छा! इस को तीस हज़ार फ्रॉंक सीफ़ा दे दो। कहते हैं उस वक़्त उस ज़माने में यह तक़रीबन एक महीने की एक आम आदमी की तनख़्वाह के बराबर रक़म थी जो डाक्टर साहिब ने तुरन्त अदा कर दी।

हनीफ़ महमूद साहिब भी लिखते हैं कि इंतिहाई मियानारवी और इनकिसारी नज़र आती थी। वाकफ़ीन के साथ बहुत प्यार और मुहब्बत का सुलूक करते थे। एक दफ़ा उनकी पत्नी बीमार हुईं तो उनका ईलाज किया बल्कि कहते हैं कि हम वैसे मश्वरे के लिए गए थे दिखाने तो गए नहीं थे। उन्होंने कहा कि पर्ची? हमने कहा पर्ची नहीं बनी तो फ़ौरी तौर पे अपने सहायक को बुलाया और अपनी जेब से सौ रुपया निकाल के उस को दिया कि जा के इनकी पर्ची बनवा के ले आओ और हमारे कहने के बावजूद भी पैसे नहीं लिए। लिखते हैं कि मासूम चेहरे के साथ इन्सान के रूप में एक चलता फिरता फ़रिश्ता थे। ख़ामोश स्वभाव वाले वजूद थे और मस्जिद मुबारक में भी नमाज़ पढ़ने आते तो बड़ी ख़ामोशी के साथ आते और लंबी नमाज़ें अदा करते।

डाक्टर मुज़फ़्फ़र चौधरी साहिब जो यूरोलोजिस्ट हैं यहां यू.के में रहते हैं। यह भी वहां वक़्फ़ आरिज़ी पर जाते रहते हैं। कहते हैं ख़ामोश स्वभाव, निहायत शफ़ीक़, हमदरद इन्सान थे। नई चीज़ें सीखने का बहुत शौक़ था ताकि लोगों की सहायता कर सकें और कहते हैं जब भी मैं वक़्फ़ आरिज़ी पर गया तो आपके दफ़्तर में बैठता था और आप अपनी कुर्सी पर मुझे बिठाते थे और बावजूद मेरे ज़ोर देने पर कि आप अपनी जगह बैठें आप दूसरी जगह जा के बैठ जाते थे।

वकीलुल माल अव्वल तहरीक जदीद रब्वाह लुक़्मान साहिब कहते हैं कि बहुत सी ख़ूबियों के मालिक थे। माली क़ुर्बानी का ख़ास शग़फ़ रखते थे। कहते हैं जब से पाकिस्तान में आए हैं तहरीक जदीद का चंदा हर साल अव्वल वक़्त में ऐलान होने के फ़ौरन बाद ख़ुद आकर दफ़्तर माल अव्वल में जमा करवा देते थे। फिर लिखते हैं कि डाकटरी उनका पेशा था लेकिन हमेशा इन्सानियत की ख़िदमत उनका उद्देश्य मालूम होता था। यदि ज़रूरत पड़े तो यह नहीं है कि एलोपैथिक के अतिरिक्त कोई दूसरा ईलाज काबिल-ए-क़बूल नहीं है होमेयोपैथिक ईलाज भी कर दिया करते थे।

डाक्टर नईम साहिब जो आजकल ओसो कोरे (asokore) हस्पताल के इंचार्ज हैं, वह कहते हैं कि बतौर इंचार्ज मिशनरी डाक्टर ओसो कोरे (asokore) मैं इक्कीस वर्ष ख़िदमात बजा लाते रहे और कहते हैं आज उनके देहांत की ख़बर सुनके बहुत सारे लोग इस क़स्बे के भी और इस इलाक़े के भी आए और उनका ताल्लुक़ डाक्टर साहिब के साथ था। सारे बहुत दुखी थे और खासतौर पर अफ़सोस कर रहे थे और कहते थे कि डाक्टर साहिब बहुत सादा तबीयत, कम बोलने वाले और अपने काम में मगन रहने वाले गरीबों का ख्याल रखने वालो और निहायत मेहमान नवाज़ शख़्सियत के हामिल थे। इसी तरह उनको दुनियावी इलम के साथ जमाअती पुस्तकों और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की कुतुब पढ़ने का भी गहरा लगाओ था। फिर डाक्टर साहिब लिखते हैं कि डाक्टर साहिब ने अहमदिया हस्पताल ओसो कोरे (asokore) में बिला-शुबा सर्जरी के मैदान में बहुत बेहतरीन ख़िदमात अंजाम दें जिसका फल आज भी हम इन मरीज़ों की सूरत में देखते हैं जो मग़रिबी अफ़्रीक़ा के मुख़्तलिफ़ देशों से इस हस्पताल में ईलाज और शिफ़ा की ग़रज़ से आते हैं और अपनी सादा अफ़्रीकन ज़बान में मुज्तबा का वर्णन करते हैं। तासीर मुज्तबा उनका नाम था तो डाक्टर मुज्तबा के नाम से जाने जाते थे। उनके पिता भी यहां कुछ वर्ष रहे हैं। इसी नाम से फिर यह नाम आगे भी चलता रहा। उन्होंने हस्पताल के कम्पाऊंड में एक ख़ूबसूरत मस्जिद भी बनवाई।

बहरहाल डाक्टर साहिब एक बेनफ़्स और ख़िदमत-ए-ख़लक़ करने वाले इन्सान थे और अपने पेशे को उन्होंने इसी काम के लिए इस्तिमाल किया। उनके पिता साहिब में और उनमें मैं ने यह ख़ुसूसीयत ख़ुद भी देखी है कि ग़रीब मरीज़ों को ईलाज के अतिरिक्त मुफ़्त दवाई के साथ ख़ुराक के लिए भी रक़म दे देते थे बल्कि अंडे और दूध मंगवा के रखते थे जो मरीज़ों को देते थे कि तुम्हारी कमज़ोरी दूर करने के लिए ज़रूरी है। दवाईयां भी मुफ़्त देते थे। साथ ख़ुराक भी मुफ़्त देते थे और कहते थे कि यह इस्तिमाल करो ताकि तुम्हारी सेहत ठीक हो।

डाक्टर ग़ुलाम मुज्तबा साहिब ने भी घाना में बड़ी ख़िदमत की है लेकिन डाक्टर तासीर मुज्तबा ने इस काम को और भी आगे बढ़ाया और मैं ख़ुद भी कई घानानीनों से, उन लोगों से वाक़िफ़ हूँ जो उनकी बड़ी तारीफ़ करते थे। बहरहाल उन्होंने हक़ीक़ी वक़्फ़ की दृष्टी से ख़िदमात सरअंजाम दें और वाकफ़ीन-ए-ज़िंदगी के लिए जब भी वह जाते तो खासतौर पर उनको देखते, उनका ईलाज करते और अपने घर मेहमान भी ठहराते। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे रहमहुल्लाह तआला जब दौरे पर गए हैं तो उन्होंने भी उनके हाँ क़ियाम फ़रमाया था और मेहमान-नवाज़ी उनकी एक ख़ास ख़ुसूसीयत थी।

हनीफ़ साहिब ने लिखा है कि एक फ़रिश्ता थे। निसंदेह एक चलता फिरता फ़रिश्ता थे। अल्लाह तआला उन्हें ग्रीक-ए-रहमत करे। दर्जात बुलंद करे। मेहमान-नवाज़ी के ज़िमन में मैं यह भी कह दूं कि मेहमान-नवाज़ी भी मर्द उसी वक़्त कर सकता है जब घर की औरत भी कर रही हो तो उनकी पत्नी भी, पत्नी भी बहुत मेहमान नवाज़ हैं, ख़िदमत करने वाली थीं। उनकी उमर और सेहत के लिए भी दुआ करें। अल्लाह तआला उनकी उमर और सेहत में बरकत डाले और उनके बच्चों को भी उनकी नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ दे और वह भी अपनी माँ की ख़िदमत का हक़ अदा करने वाले हों।

☆ ☆ ☆ ☆

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 103 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

पृष्ठ 11 का शेष

शब्द पर ग़ौर करो कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ि को अपने साथ मिलाते हैं यह फ़रमाया إِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا ۔ مَعَنَام में आप दोनों सम्मलित। अर्थात तेरे और मेरे साथ है। अल्लाह तआला ने एक पल्ला पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को रखा और दूसरे पर हज़रत सिद्दीक़ रज़ि को । इस वक़्त दोनों परीक्षा में हैं। क्योंकि यही वह स्थान है जहां से या तो इस्लाम की बुनियाद पड़ने वाली है या ख़ात्मा हो जाने वाला है। दुश्मन ग़ार पर मौजूद हैं और विभिन्नि प्रकार के राय हो रहे हैं। कई कहते हैं कहा कि ग़ार की तलाशी करो। क्योंकि पैर का निशान यहां तक ही आकर ख़त्म हो जाता है। परन्तु उनमें से कई कहते हैं कि यहां इन्सान का गुज़र और दख़ल कैसे होगा। मकड़ी ने जाला तना हुआ है,कबूतर ने अंडे दिए हुए हैं। इस प्रकार की बातों की आवाज़ें अंदर पहुंच रही हैं और आप बड़ी सफ़ाई से उनको सुन रहे हैं। ऐसी अवस्था में दुश्मन आए हैं कि वे ख़ातमा करना चाहते हैं। और दीवाने की तरह बढ़े आए हैं,परन्तु आपकी बहादुरी को देखो कि दुश्मन सिर पर है और आप अपने सच्चे दोस्त सिद्दीक़ को फ़रमाते हैं لَا تَحْزَنْ إِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا। यह शब्द बड़ी सफ़ाई के साथ ज़ाहिर करते हैं आपने ज़बान ही से फ़रमाया। क्योंकि यह आवाज़ को चाहते हैं। इशारा से काम नहीं चलता। बाहर दुश्मन मश्वरा कर रहे हैं और अंदर ग़ार में ख़ादिम तथा मख़दूम भी बातों में लगे हुए हैं। इस बात की परवाह नहीं की गई कि दुश्मन आवाज़ सुन लेंगे। यह अल्लाह तआला पर कमाल ईमान और मार्फ़त का सबूत है। ख़ुदा तआला के वादों पर पूरा भरोसा है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बहादुरी के लिए तो यह नमूना काफ़ी है। अबूबकर सिद्दीक़ की बहादुरी के लिए एक दूसरा गवाह इस घटना के अतिरिक्त और भी है

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के देहन्त के समय हज़रत अबू बकर रज़ि की बहादुरी

जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने देहन्त फरमाया और हज़रत उमर रज़ी अल्लाह अन्हो तलवार खींच कर निकले कि यदि कोई कहेगा कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने देहान्त किया है, तो मैं उसे क़तल करूँगा। ऐसी हालत में हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ि ने बड़ी जुर्रत और दिलेरी से बात की और खड़े हो कर ख़ुतबा पढ़ा। مَا مُحَمَّدٌ إِلَّا رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ(आले इमरान: 145) अर्थात मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी अल्लाह तआला के एक रसूल ही हैं और आप से पहले जितने नबी हुए हैं। सब ने वफ़ात पाई। इस पर वह जोश दूर हुआ। इसके बाद देहाती मुर्तद हो गए। ऐसे नाज़ुक वक़्त की हालत को हज़रत आईशा रज़ी अल्लाह अन्हा ने यूं ज़ाहिर किया है कि पैग़ंबर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का देहन्त हो चुका है और कई झूटे नबुव्वत के दावा करने वाले हो गए हैं और कइयों ने नमाज़ें छोड़ दीं और रंग बदल गया है। ऐसी हालत में और इस मुसीबत में मेरा बाप आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ख़लीफ़ा और जांनशीन हुआ। मेरे बाप पर ऐसे ऐसे ग़म आए कि यदि पहाड़ों पर आते तो वे भी समाप्त हो जाते। अब ग़ौर करो कि मुश्किलों के पहाड़ टूट पड़ने पर भी हिम्मत और हौसला को न छोड़ना यह किसी मामूली इन्सान का काम नहीं। यह दृढ़ता सच्चाई ही को चाहती थी और सिद्दीक़ रज़ि ही ने दिखाई। संभव न था कि कोई दूसरा इस ख़तरा को सँभाल सकता। समस्त सहाबा रज़ि उस वक़्त मौजूद थे। किसी ने न कहा कि मेरा हक़ है। वे देखते थे कि आग लग चुकी है। इस आग में कौन पड़े। हज़रत उम्र रज़ी अल्लाह अन्हो ने इस हालत में हाथ बढ़ा कर आपके हाथ पर बैअत की और फिर सबने एक के बाद दूसरे ने बैअत कर ली। यह उनकी ही सच्चाई थी कि इस फ़ित्ना को दूर किया और उन कष्टदेने वालों को हलाक किया। मुसैलमा के साथ एक लाख आदमी था और इसके मसाइल इबाहत के मसाइल थे। लोग उसकी इबाहती बातों को देख देख कर उसके मज़हब में शामिल होते जाते थे, परन्तु ख़ुदा तआला ने इस साथ होने का सबूत दिया और सारी मुश्किलों को आसान कर दिया।

ईसाईयत क़बूल करने की तरग़ीबात

मसीह के ख़ून पर ईमान लाना भी आसान हुआ-हुआ है। क्योंकि इस पर ईमान लाने से एक तो रोटी मिल जाती है दूसरे इबाहत की ज़िन्दगी। पहले तो अल्लाहु-अकबर की आवाज़ से ही नमाज़ के लिए उठना पड़ता और अब यह हाल कि मसीह के ख़ून पर ईमान लाकर रात को शराब पी कर सो गए और जब जी चाहा उठे। कोई सावल जवाब नहीं। ऐसी हालत में लोगों का रुजू ईसाईयत की तरफ़ होना अनिवार्य बात है। लोगों की हालत कुछ इस किस्म की हो गई है कि कहते हैं।' इह जहान मट्ठा, अगला किस ने डिट्ठा।"

इस जहान में बदमाशियां कर लो, आगे देखा जाएगा। इस किस्म के लोग रोटी, बे क़ैदी और आराम की ज़िन्दगी ईसाईयत ही में पा सकते हैं। इन के लिए कोई ज़रूरी बात नहीं। चाह दस वर्ष तक भी ग़ुसल जनाबत न करें। अत: उन लोगों को जो ईसाई हुए हैं देखकर आश्चर्य नहीं करना चाहिए। यह नास्तिकता की आदतवाले जो मुर्तद हुए हैं, यदि ईसाई न होते तो भीतरी रूप से भी तो मुर्तद ही थे।

चार प्रकार के लोग होते हैं। एक स्थायी काफ़िर जो बे क़ैदी और इबाहत की ज़िन्दगी को चाहते हैं। और तीन किस्म के मोमिन ज़ालिम ले नफ़सेही, मुक़तसिद, साबिक़ बिलख़ैरात। पहली किस्म के मोमिन वे हैं जो ज़ालिम हैं, अर्थात उन पर कुछ-कुछ नफ़स के जोश ग़ालिब आ जाते हैं। दूसरे मध्यवर्थी तीसरे साक्षात भलाई। अब अज़ली काफ़िर जो नफ़स के ग़ुलाम और बंदे हैं। जिनका मूल उद्देश्य इस के अतिरिक्त और कुछ नहीं कि बे क़ैदी की ज़िन्दगी व्यतीत हो और रुपया भी मिल जाए। इन को इस्लाम से क्या सम्बन्ध, वह तो ईसाईयत को पसन्द करेंगे जहां तनख़्वाह मिल जाए और किसी चीज़ की ज़रूरत न रहे। गिरजा में गए तो वहां भी केवल इस उद्देश्य से कि सैंक्ड़ों ख़ूबसूरत औरतें अच्छे लिबास पहन कर जाती हैं। वहां बदनज़री के लिए जा बैठे। अत: इस किस्म की इबाहती ज़िन्दगी वालों को इस्लाम से कोई सम्बन्ध हो ही नहीं सकती।

हज़रत अबूबकर रज़ि इस्लाम के लिए दूसरे आदम हैं।

इस ज़माना में भी मुसैलमा ने इबाहती रंग में लोगों को जमा कर रखा था। ऐसे वक़्त में हज़रत अबूबकर रज़ि ख़लीफ़ा हुए तो इन्सान ख़्याल कर सकता है कि कितनी मुश्किलें पैदा हुई होंगी। यदि वह मजबूत दिल न होते और पैग़ंबर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ईमान का रंग उसके ईमान में न होता तो बहुत ही मुश्किल पड़ती और घबरा जाते, परन्तु सिद्दीक़ रज़ि नबी का हमसाया था। आपके अख़्लाक़ का प्रभाव उन पर पड़ा हुआ था और दिल विश्वास के नूर से भरा हुआ था। इसलिए वह बहादुरी और दृढ़ता दिखाई कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद उसका उदाहरण मिलना मुश्किल है। उनकी मौत इस्लाम की ज़िन्दगी थी। यह ऐसा मसला है कि इस पर किसी लंबी बेहस की आश्यकता ही नहीं। इस ज़माना के हालात पढ़ लो और फिर जो इस्लाम की सेवा अबू बकर रज़ी अल्लाह अन्हो ने की है, इस का अंदाज़ा करो। मैं सच कहता हूँ कि अबूबकर सिद्दीक़ इस्लाम के लिए दूसरे आदम हैं। मैं विश्वास रखता हूँ कि यदि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद अबूबकर सिद्दीक़ का वजूद न होता , तो इस्लाम भी न होता। अबूबकर सदीक़ रज़ि का बहुत बड़ा उपकार है इस ने इस्लाम को दोबारा स्थापित किया। अपनी ईमानी क़ुव्वत से समस्त बाग़ियों को सज़ा दी। और अमन को स्थापित कर दिया। इसी तरह पर जैसे ख़ुदा तआला ने फ़रमाया और वादा किया था कि मैं सच्चे ख़लीफ़ा को अमन के साथ को क़ायम करूँगा। यह भविष्यवाणी हज़रत सिद्दीक़ रज़ि की ख़िलाफ़त पर पूरी हुई और आसमान ने और ज़मीन ने व्यावहारिक़ रूप से गवाही दे दी। अत: यह सिद्दीक़ की प्रशंसा है उस में सच्चाई इस मर्तबा और कमाल का होना चाहिए। उदाहरणों से मसले बहुत शीघ्र हल हो जाते हैं।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 332 से 334 प्रकाशन 2008 ई क़ादियान)

☆ ☆ ☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

लेकर दूसरे को दिया जाए केवल अल्लाह तआला बना सकता है जो मख़लूक़ की मदद का मुहताज नहीं और सब ही उस के बंदे हैं।

यह कैसी ज़बरदस्त सच्चाई है। हज़ारों वर्षों से इन्सान क़ानून बना रहा है परन्तु किस तरह इस में किसी की हक़तलफ़ी की जाती है और किसी को हक़ से ज़्यादा दिया जाता है। आजकल के सयासी मतभेदों को ही देखो कोई हुकूमत मज़दूरों के हक़ को दबा रही है तो कोई उन्ही को सब कुछ देकर दूसरों को हुकूक़-ए-इंसानियत से ही वंचित कर रही है।

इसी तरह इन्सान चूँकि भावनाओं का ग़ुलाम होता है जो क़ानून बनाता है वह अपनी भावनाओं को स्पष्ट कर देता है। सारी दुनिया की भावनाओं का ख़्याल नहीं रखता है न रख सकता है यदि रहबानियत की तरफ़ झुकाव रखने वाला दुनिया तर्क कर देने का नाम ही नेकी रखता है तो दुनिया से प्रेम रखने वाला दुनयावी प्रगतियों का नाम ही नेकी रखता है। इस नुक़्स से वही शिक्षा पवित्र हो सकती है जो इन्सान के पैदा करने वाले की तरफ़ से हो जो सब इन्सानों की भावनाओं से अवगत हो और सब की भावनाओं को मुनासिब हद तक उभारने का ख़्याल रखे।

(तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 4, पृष्ठ 133, प्रकाशन 2010 क़ादियान)

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 6 Thursday 16 December 2021 Issue No.50

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 575/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

पृष्ठ 1 का शेष

ज़ुबैर बिन मुतअम से हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की विदाई लेने के बारे में दरयाफ़त किया। इस तरफ़ से इंकार पर वह रिश्ता ख़त्म हो गया और फिर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा का निकाह अमल में आया। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो का ज़ुबैर बिन मुतअम से विदाई का कहना साबित करता है कि हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की आयु उस वक़्त छः वर्ष कदापि नहीं थी बल्कि आप उस वक़्त भी शादी की आयु को पहुंच चुकी थीं।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपने मुहक़्क़िक़ाना ढंग के अनुसार हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की आयु के बारे में मर्वी रिवायत का ध्यानपूर्वक जायज़ा लेने के बाद जो परिणाम निकाला है उस के अनुसार आपने शादी के वक़्त हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की आयु तेराह चौदह वर्ष क़रार दी है और यही दरुस्त आयु है। इस से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वफ़ात के वक़्त हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की आयु इक्कीस बाईस वर्ष बनती हैं जो दीनी इलम के हुसूल की तकमील और आगे लोगों को तालीम देने की बेहतरीन आयु बनती है।

इस ज़माना के हकम और इन्साफ सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की आंहज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शादी के वक़्त आपकी नौ वर्ष आयु के सम्बन्ध में रिवायत का पूर्णता खंडन फ़रमाया है। इसलिए एक इस्लाम का दुश्मन पादरी फ़तह मसीह के आपत्तियां का उत्तर देते हुए हुज़ूर अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : "आपने जो हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अनहा का वर्णन कर के नौ वर्ष की रस्म शादी का वर्णन लिखा है। प्रथम तो नौ वर्ष वर्णन आंहज़रतआँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ज़बान से साबित नहीं और न इस में कोई वह्यी हुई और ना नियमति ख़बरों से साबित हुआ कि ज़रूर नौ वर्ष ही थी। केवल एक रावी से मनक़ूल है।"

(नूरुल क़ुरआन नंबर 2 रुहानी ख़ज़ायन भाग 9 पृष्ठ 377)

इसी तरह एक और जगह हुज़ूर अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं "हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा का नौ साला होना तो केवल बिना तर्क की बातों में आया है। किसी हदीस या क़ुरआन से साबित नहीं।"

(आर्या धर्म, रुहानी ख़ज़ायन भाग 10 पृष्ठ 64)

अत: ख़ुलासा कलाम यह कि ऐसी समस्त रिवायत जिनमें शादी के वक़्त हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की आयु नौ साल वर्णन हुई है दृष्टिगत हैं। इन रिवायत में या तो रावियों को गलती हुई है या बाद में आने वाले रावियों ने अपनी तरफ़ से उनमें बढ़ोतरी कर दी है। इतिहास की पुस्तकों और जीवनियों की पुस्तकों पर ग़ौर करने से बख़ूबी साबित होता है कि हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की शादी के वक़्त एक उचित उम्र थी, जिस उम्र में क़ुरैश साधारणता अपनी बच्चियों की शादियां किया करते थे। यह शादी उस वक़्त अरब के माहौल में न तो कोई ख़ास वर्णन योग्य अपवाद लिए हुए थी और न ही ऐसी आपति के योग्य कैफ़ीयत इस में थी कि मुनाफ़क़ीन और कुफ़्फ़ार इस पर आपत्ति या तान और तशनीअ या हैरत और आशचर्य की उंगली उठाते।

प्रश्न : इसी तरह एक और मसला कि "यदि इमाम किसी मजबूरी की वजह से बैठ कर नमाज़ पढ़ाए तो मुक़्तदियों को किस तरह नमाज़ पढ़नी चाहीए ?'' के बारे में भी हुज़ूर अनवर ने मार्ग दर्शन फ़रमाते हुए इरशाद फ़रमाया :

उत्तर : हादीस में इस बारे में बड़े विस्तार के साथ हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की जीवनी का पता चलता है। इसलिए सही बुख़ारी में हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा और हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हो से मर्वी हदीसों में वर्णन है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अपने प्राथमिक समय में एक स्थान पर घोड़े से गिर गए और हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने नमाज़ बैठ कर पढ़ाई, सहाबा आपके पीछे खड़े हो कर नमाज़ पढ़ने तो आआँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन्हें इशारा से बैठ जाने का इरशाद फ़रमाया और नमाज़ के बाद उन्हें फ़रमाया कि इमाम इसलिए बनाया जाता है कि उस की इक़तिदा की जाए अत: जिस तरह वह नमाज़ पढ़े उसी तरह तुम नमाज़ पढ़ो।

लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की आख़िरी रोग में जिसमें आपका देहांत हुआ, आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को नमाज़ की इमामत का इरशाद फ़रमाया और जब हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तबीयत कुछ सँभल गई तो आप नमाज़ के लिए तशरीफ़ ले गए और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के बाएं जानिब बैठ कर नमाज़ अदा फ़रमाई।

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं कि उस वक़्त हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो उस में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की इक़तिदा कर रहे थे और लोग हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की इक़तिदा कर रहे थे।

वास्तव में लोग भी हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ही इक़तिदा कर रहे थे। लेकिन बीमारी की वजह से हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम चूँकि बुलंद आवाज़ में तकबीर इत्यादि नहीं कह पा रहे थे, इसलिए हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो तकबीर देने वाले के तौर पर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की आवाज़ आगे लोगों तक पहुंचा रहे थे।

यहां यह बात भी खासतौर पर योग्य करने योग्य है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की बाई तरफ़ बैठना बताता है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम इस नमाज़ में इमाम थे, क्योंकि इमाम बाई तरफ़ होता है और मुक़तदी दाई तरफ़। इसलिए इस बारे में भी हमें हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सुन्नत मिलती है कि एक अवसर पर जब कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तहज्जुद की नमाज़ अदा कर रहे थे तो हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो बाद में नमाज़ में शामिल हो कर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की बाई तरफ़ खड़े हो गए तो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन्हें सिर से पकड़ कर अपनी दाई तरफ़ कर लिया।

हज़रत इमाम बुख़ारी ने अपने उस्ताद हमीदी का इस बारे में क़ौल दर्ज किया है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का पहला इरशाद यही था कि यदि इमाम बैठ कर नमाज़ पढ़े तो मुक़तदी भी बैठ कर ही नमाज़ पढ़ें। लेकिन बाद में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने बैठ कर नमाज़ पढ़ी और आपकी इक़तिदा में सहाबा ने खड़े हो कर नमाज़ अदा की और आपने उन्हें बैठने का इरशाद नहीं फ़रमाया और हुज़ूर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आख़िरी कार्य से संद ली जाती है और हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का आख़िरी कार्य यही है कि यदि इमाम अपनी किसी मजबूरी की वजह से बैठ कर नमाज़ पढ़े तो मुक़तदी खड़े हो कर नमाज़ पढ़ें।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो इस बारे में फ़रमाते हैं : "चूँकि मुझे सिर दर्द का दौरा है। इस लिए मैं ख़ुतबा जुमा खड़े हो कर नहीं पढ़ा सकता। इसी तरह नमाज़ भी खड़े हो कर नहीं पढ़ी रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का आरंभ में यह आदेश था कि जब इमाम खड़े हो कर नमाज़ न पढ़ा सके तो मुक़तदी भी बैठ कर नमाज़ पढ़ करें लेकिन बाद में ख़ुदा तआला की हिदायत के अधीन आपने इस आदेश को बदल दिया और फ़रमाया कि यदि इमाम किसी माज़ूरी की वजह से बैठ कर नमाज़ पढ़ाए तो मुक़तदी न बैठें बल्कि वह खड़े हो कर ही नमाज़ अदा करें। अत: चूँकि मैं खड़े हो कर नमाज़ नहीं पढ़ा सकता इस लिए मैं बैठ कर नमाज़ पढ़ाऊंगा और दोस्त खड़े हो कर नमाज़ अदा करें।"

(रोज़नामा अलफ़ज़ल लाहौर 3 जुलाई 1951 ई. पृष्ठ 3)

अत: यदि इमाम अपनी किसी मजबूरी की वजह से बैठ कर नमाज़ पढ़े तो मुक़तदी खड़े हो कर नमाज़ पढ़ेंगे।

(धन्यवाद सहित अख़बार इंटरनैशनल 5 फ़रवरी 2021 ई.)

(ज़हीर अहमद ख़ान, मुरब्बी सिलसिला, इंचार्ज विभाग रिकार्ड दफ़्तर पी एस लंदन)

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad